

21-22वां (संयुक्तांक)

75
आजादी का
अमृत महोत्सव



सुरभि

वरुनेई



उदयगिरि

कोरापुट



दारिगबाड़ी



रामचण्डी



देवमाली



धौली

कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम), ओड़िशा, भुवनेश्वर
महालेखाकार (लेखापरीक्षा - द्वितीय), ओड़िशा, भुवनेश्वर
महानिदेशक - लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद, शाखा कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर



सुरभि
2023

संदेश



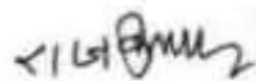
श्री राज कुमार
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

इस कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 21-22 वें संयुक्तांक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। हमेशा से विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अहम योगदान रहा है। हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि में वृद्धि कर कार्यालयीन काम-काज में हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के साथ-साथ कर्मिकों को एक रचनात्मक मंच प्रदान करना भी है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह संयुक्तांक कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मक वातावरण बनाने में मददगार साबित होने के साथ-साथ कार्यालय में राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में भी एक सफल भूमिका निभाएगा।

इस संयुक्तांक के सुंदर प्रस्तुतीकरण हेतु मैं संपादक मंडल तथा समस्त रचनाकारों के साथ-साथ पत्रिका के सफल संपादन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी कर्मिकों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

"सुरभि" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।



(राज कुमार)
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

सुरभि
2023

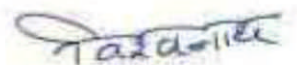
संदेश



विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

राजभाषा गृह पत्रिका 'सुरभि' के नवीन अंक को पाठकों के समक्ष रखने का यह अवसर अत्यंत हर्ष का विषय है। कार्यालय के कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों द्वारा वर्तमान परिपेक्ष्य के अनेक पहलुओं पर हिंदी में लिखी रचनाएं पत्रिका को समृद्ध एवं बहुमुखी बनाती हैं। कार्यालय की गृह पत्रिका में समाहित लेख राजभाषा की सुगंध को चहुं ओर बिखेरकर राजभाषा का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार तो करते ही हैं, साथ-साथ इसमें मौजूद प्रगाढ़ विषय वस्तु सुधी पाठकों को विशेष साहित्य का अनुभव भी प्रदान करते हैं।

मैं सभी रचनाकारों और संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और 'सुरभि' को अनंत के सफर तक जाने की कामना करता हूँ।



विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

सुरभि
2023

संदेश



दीपक रघु

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं प्रधान संपादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

ओड़िशा, भुवनेश्वर

इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक गृह हिंदी पत्रिका "सुरभि" का संयुक्तांक (21 वाँ एवं 22वाँ अंक) पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के विकास एवं संवर्धन हेतु अत्यधिक महत्व रखता है। यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण की भावना को दर्शाती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "सुरभि" पत्रिका का यह संयुक्तांक कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी सहायक होगा।

मैं "सुरभि" पत्रिका के संपादक एवं प्रबंधक मंडल के सभी सदस्यों सहित सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मेरी मंगल कामना है कि "सुरभि" पत्रिका इसी प्रकार से रचनात्मक उत्कर्ष के नए कीर्तिमान रचती रहे।

दीपकरघु
(दीपक रघु)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं प्रधान संपादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

ओड़िशा, भुवनेश्वर

सुरभि
2023

संदेश



सुशांत रंजन

वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II)

ओड़िशा, भुवनेश्वर

कार्यालय की गृह पत्रिका कर्मिकों के सृजनात्मक क्षमताओं को प्लेटफॉर्म देने का कार्य करती आ रही है। वैचारिक विविधताओं से पूर्ण यह पत्रिका विभिन्न प्रकार के विषयों को अपने अंदर समाहित करती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को पसंद आएगी और नए रचनाकारों को इसमें अपना योगदान देने के लिए प्रेरित भी करेगी।

राजभाषा पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों को राजभाषा के प्रति रुचि बढ़ाना एवं इसे जीवंत रखना है। इस प्रक्रिया में स्वतः उनके रचनात्मक प्रतिभा का विकास भी होता है। मुझे आशा है कि पत्रिका को अधिक सारगर्भित बनाने हेतु लेखक एवं संपादक मंडल अपनी अहम भूमिका निरंतर निभाते रहेंगे।

मेरी ओर से 'सुरभि' के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।



सुशांत रंजन

वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II)

ओड़िशा, भुवनेश्वर

सुरभि
2023

संदेश

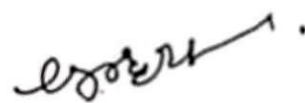


दुशासन बेहेरा
निदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
हैदराबाद
शाखा कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर

गृह पत्रिका सुरभि के वर्तमान अंक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं। कार्यालय की पत्रिका 'सुरभि' राजभाषा के प्रचार-प्रसार का एक अभिन्न अंग बन गई है। तरह-तरह की रचनाएं राजभाषा के प्रति कार्मिकों की रुचि के साथ-साथ उनकी सोच के विभिन्न आयामों को भी प्रदर्शित करती है, जिससे उनकी रचनाशीलता और अधिक सुंदर और स्पष्ट होती जाती है।

गृह पत्रिका 'सुरभि' द्वारा कार्यालय में राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति को देखा जा सकता है। मुझे इस बात का हर्ष है कि 'सुरभि' प्रति वर्ष कामयाबी के नए सोपान चढ़ता जा रहा है।

मेरी ओर से संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों को बधाई।



दुशासन बेहेरा
निदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
हैदराबाद
शाखा कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर

सुरभि
2023

संदेश



सुश्री मनालिका बॉर्गेहाइन्
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 21-22 वें संयुक्तांक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना, मेरे लिए एक अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है। हिंदी केवल हमारी राजभाषा ही नहीं अपितु हमारा राष्ट्रगौरव भी है। हिंदी देश में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है जो कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत को उत्तरोत्तर एक नई पहचान देकर भारत का मान बढ़ा रही है। पत्रिका के इस संयुक्तांक का सफल प्रकाशन इस कार्यालय के कार्मिकों की राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा एवं समर्पण का ही प्रतिफल है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह संयुक्तांक कार्यालय में कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाने के साथ-साथ हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी सहायक होगा।

“सुरभि” पत्रिका के इस अंक के सफल संपादन हेतु मैं संपादक मंडल तथा समस्त रचनाकारों को हार्दिक धन्यवाद अर्पित करती हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

मनालिका

सुश्री मनालिका बॉर्गेहाइन्
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

सुरभि 2023

सुरभि परिवार

परामर्शदाता समिति
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - 1)
महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - 2)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
(लेखापरीक्षा - 1)
निदेशक
(केन्द्रीय राजस्व लेखापरीक्षा)
उप महालेखाकार (प्रशासन)
(लेखापरीक्षा - 2)
संपादक मंडल
प्रधान संपादक
श्री दीपक रघु
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
सह संपादक
श्री आशुतोष प्रसाद प्रतिहारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती शुभस्मिता आचार्य
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री गिरराज शरण अग्रवाल
हिंदी अधिकारी
श्री शैलेन्द्र कुमार
हिंदी अधिकारी
श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक
श्रीमती संयुक्ता जड़िया
कनिष्ठ अनुवादक
श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री दीपिका चटर्जी
कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री सुषमा साव
कनिष्ठ अनुवादक

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा
नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1.	ॐ इग्नोराय नमः	गिरराज शरण अग्रवाल	1
2.	ओडिशा में ऑडिट रिपोर्ट और उसका महत्त्व	गुप्त प्रसाद मिश्र	3
3.	कदमपुर खादी	पुरुषोत्तम गिरि	5
4.	हमारी राजभाषा हिंदी	राहुल कुमार वर्मा	7
5.	मुंबई- कभी ना रुकने वाला शहर	संयुक्ता जड़िया	9
6.	सबसे महान धर्म	तितली पंडा	12
7.	चंद्रयान- 3 की सफलता पलट देगी इकोनोमी	अमित प्रधान	15
8.	नदी मालिनी और रथ यात्रा	श्री कालिप्रसाद मिश्र	17
9.	कार्यालय की नई कैटीन	शैलेन्द्र कुमार	19
10.	माँ	प्रशांत सिंह भदौरिया	20
11.	एक रिश्ता प्रकृति और पर्यावरण के साथ	मीनाक्षी आचार्य	21
12.	बिरजू की माँ	धीरज कुमार	23
13.	ख्वाहिश-ए-दिल	सतीश कुमार	24
14.	मिथिला का गौरवमयी अतीत	राजेश झा	25
15.	भारत की अध्यक्षता में G-20	तपेश कुमार	28
16.	पगली की कहानी	नवीन चंद्र चौधरी	30
17.	बदलते समय के साथ जीवन की परिभाषा	भूदेव प्रकाश	31
18.	टूटते एहसास	परी सरकार	33
19.	दीनबंधु	अजय साव	34
20.	शुल्क निशुल्क	स्वर्णजीत कुमार सिंहा	35
21.	दिल और दिमाग के बीच कशमकश	प्रमोद कुमार	36
22.	क्या हम अपनी हरियाली के रक्षक हैं ?	सत्यनारायण दास	37
23.	जय जगन्नाथ	वर्षारानी	38
24.	ओडिशा का आर्ट विलेज- रघुराजपुर	आंखी सरकार	40
25.	मानसिक स्वास्थ्य	श्रीमती तुलसी वर्मा	42
26.	पैगाम	सुश्री राजेश्वरी गायकवाड़	43
27.	प्रार्थना	श्रीमती कमला नायक	44

सुरभि
2023

ॐ इग्नोराय नमः

श्री गिरराज शरण अग्रवाल
हिंदी अधिकारी
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर
मो.न.- 7749838833



इस लेख का शीर्षक शायद आपको आकर्षित कर रहा हो। हो सकता है आप शीर्षक देख कर ही इसे पढ़ने का श्रम करने की सोचें। अगर आपने ऐसा सोचा है तो आपका निर्णय लाभप्रद सिद्ध होगा।

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति (जिसमें युवावर्ग भी शामिल है) कोई न कोई बीमारी से ग्रसित है जैसे बीपी, शुगर, थायराइड, किडनी स्टोन जैसी काफी सामान्य बीमारियां हैं। इसके परे एक बीमारी और है जो सभी को है, जिसे कोई बीमारी नहीं है उसे भी - वह है तनाव की। ऐसा लगता है कि चारों तरफ तनाव बिखरा पड़ा है और हम सभी इसे इकट्ठा करने के लिए बताव हैं।

अच्छा, एक बात बताइये हमारे दादा-दादी आदि वाली पीढ़ी को क्या कभी इतना तनाव था। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ सामान्यतः नहीं। पर वो कैसे?

क्योंकि 70-80 के दशक में बच्चों को पैसा कमाने की पढ़ाई के स्थान पर जीवन जीने की कला सिखायी जाती थी। बचपन में ही विभिन्न धार्मिक ग्रंथों एवं साहित्य के माध्यम से अनेकों चौपाईयां, मंत्र एवं श्लोक कंठस्थ करा दिये जाते थे जो हमें जीवन की विभिन्न विषम परिस्थितियों में संबल प्रदान करते थे। जैसे-

तुलसी भरोसे राम के
निर्भय हो के सोए,
अनहोनी होनी नहीं
होनी हो सो होए।

किंतु आधुनिक समय में हमने बच्चों को किताबी कीड़ा बना दिया है जिसके फलस्वरूप उन्हें प्राचीन ग्रंथ, साहित्य सब दकियानूसी प्रतीत होते हैं। जीवन में जब भी कोई विषम परिस्थिति आती है तो ये लोग (नई पीढ़ी) तुरंत परेशान हो जाते हैं या डिप्रेशन में चले जाते हैं या अत्यधिक विषम परिस्थिति में आत्महत्या तक की स्थितियां पैदा हो जाती हैं। हम प्रायः समाचारों में नवयुवक/ नवयुवतियों द्वारा आत्महत्या की खबर पढ़ते हैं। ऐसी स्थिति में वर्तमान परिवेश में आधुनिक पीढ़ी के तनाव एवं समस्याओं को कम करने का कोई मंत्र हो सकता है तो वह है-

ॐ इग्नोराय नमः

यह संसार विविधता से परिपूर्ण है। विविधता से ही संसार सार है। इस तरह हर मनुष्य विलक्षण है। विविधता इतनी अधिक है कि एक ही माँ के दो भाई-बहन भी अलग-अलग स्वभाव के होते हैं। यही विविधता मतभेद और मनभेद भी उत्पन्न कराती है।

मानव सभी कार्य अपने मन के अनुरूप चाहता है। जबकि तथ्य यह है कि जीवन का हर कार्य/ व्यक्ति हमारे अनुरूप हो ही नहीं सकता है। पांडव युद्ध नहीं चाहते थे पर होनी में था सो, उन्हें करना ही पड़ा। राजा दशरथ कभी भी अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम को वनों में भटकते नहीं देना चाहते थे। वे राजा थे, वीर थे, इस परिस्थिति से निपटने की क्षमता थी, परंतु होनी थी सो प्रभू श्रीराम को वन जाना ही पड़ा। ज्यादातर समस्याओं का कारण हमारी प्रतिक्रिया या

परिस्थिति को स्वीकार न करना होता है। राम ने, दशरथ ने, लक्ष्मण ने, उर्मिला ने सब ने इस होनी को स्वीकारा, सामना किया और विजयी भी हुए। संघर्ष और समर्पण पर ही जिंदगी की नाव टिकी है। पूरी जिंदगी भी अगर आप संघर्ष करते रहते हैं तो अंततः काल के हाथों आपको जिंदगी को समर्पित कर ही देना होगा।

जीवन को शांति से जीने के लिए 'ॐ इग्नोराय नमः' मंत्र रामबाण साबित हो सकता है। छोटी-छोटी बातों पर प्रतिक्रिया न देकर हम अपने जीवन को असीम शांति की ओर ले जा सकते हैं। आपने प्रायः देखा होगा कि छोटी-छोटी बातों पर प्रतिक्रिया ही अक्सर बड़े मुद्दों में परिवर्तित हो जाती हैं। छोटी छोटी बातें चिंगारी होती हैं इनमें इतनी हैसीयत होती है कि आपको पूरे कुनबे को राख कर दे। बचने के लिए केवल आपको इससे दूरी बनानी होती है। 'ॐ इग्नोराय नमः' मंत्र का अमल करना सीख जाते हैं जैसे ही कोई बात मनमाफिक ना हो तो अंदर एक ही आवाज आनी चाहिए 'ॐ इग्नोराय नमः'।

यह मंत्र दिखने एवं बोलने में जितना छोटा है अमल करने में उतना ही कठिन है। प्रतिक्रिया न करना या

परिस्थिति को स्वीकार कर लेना आसान नहीं होता है। मानव का स्वभाव है प्रतिक्रिया करना। किंतु इस मंत्र के बार-बार अभ्यास से जीवन की 99 प्रतिशत समस्याओं से बच सकते हैं।

मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तीन शब्दों का यह छोटा सा मंत्र आपके जीवन में चमत्कार ला सकता है और आपके जीवन को शांतिपूर्ण, सुखमय तथा आनंदमय बना सकता है।

अतः समाज में मौजूद परिवारों के बिगडते हालात को देखकर मैं आग्रह करूंगा कि आज से ही इस मंत्र को अमल में लाने का अभ्यास आरम्भ करें ताकि खुशियां आपके दरवाजे से बचकर न निकल पाए।

इस लेख को लिखने की प्रेरणा मुझे मेरे कार्यालयी मित्र शैलेंद्र जी जो राजभाषा अधिकारी हैं उनके व्हाटसऐप तथा फेसबुक के स्टेटस/पंच लाइन से मिली है। मैंने बस इसके मायने को आपतक पहुंचाने का कार्य करने का सोचा। चूँकि इन तीन शब्दों ने विगत कुछ महीनों में मेरी जिंदगी में एक बड़ा बदलाव लाया है मुझे लगा कि अगर एक भी सुधी पाठक का जीवन इससे आनंदमयी हो जाए तो मैं अपने इस प्रयास को सफल मानूंगा।

ॐ इग्नोराय नमः



ओडिशा में ऑडिट रिपोर्ट और इसका महत्व

श्री गुप्त प्रसाद मिश्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय-महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
ओडिशा, भुवनेश्वर



भारत में सरकारी लेखापरीक्षा का 19वीं शताब्दी के मध्य से एक लम्बा और शानदार इतिहास है। हालाँकि, ऑडिट की भूमिका और महत्व इस भूमि की अधिकांश आबादी को अच्छी तरह से ज्ञात नहीं है, भले ही हर साल कई ऑडिट रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही हैं और सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध हैं।

ओडिशा राज्य में खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का एक बड़ा भंडार है। इस भूमि के लोग ज्यादातर शांतिप्रिय हैं और राजनीतिक रूप से यह एक स्थिर क्षेत्र है। इस प्रकार संसाधन और सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि इस क्षेत्र को हमारे देश के अग्रणी राज्यों में से एक में बदल सकती थी लेकिन दुर्भाग्य से, औद्योगिक जरूरतों को पूरा करने की पूरी क्षमता होने के बावजूद, ओडिशा को आजादी के 75 साल बाद भी एक विकसित राज्य नहीं माना जाता है। लोग ज्यादातर अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों से अनजान हैं। यह लेखापरीक्षा विभाग की भूमिका को संभावित खामियों में उद्यम करने के लिए आवश्यक बनाता है यही खामियां राज्य को देश के अग्रणी राज्यों में से एक होने से रोकती हैं।

यह संयोग ही है कि काफी समय तक कर्नाटक राज्य के रिपोर्ट अनुभाग में सेवा करने के बाद मुझे ओडिशा कार्यालय में शामिल होने के बाद उसी अनुभाग में काम करने का अवसर मिला। एक वर्ष की अवधि में, मुझे इसकी तैयारी के साथ साथ अंतिम चरणों के दौरान कुछ अच्छी रिपोर्टों से जुड़ने का अवसर मिला। मैं गर्व की भावना के साथ यह स्वीकार कर सकता हूँ कि अच्छी रिपोर्ट लाने का हमारा प्रयास अन्य राज्य की तुलना में कम नहीं है। वास्तव में, मैंने पाया कि एक वर्ष में उठाए गए विषयों की औसत संख्या यहाँ अधिक है, जो इस तथ्य का संकेत है कि हमारे ऑडिटिंग स्टाफ

द्वारा अनगिनत प्रयास और कड़ी मेहनत की गई है।

हाल ही के दिनों में ओडिशा के वन विभाग द्वारा किये गए वृक्षारोपण गतिविधियों के आकलन पर एक निष्पादन लेखापरीक्षा (Performance Audit) प्रकाशित की गई थी और यह सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध है। यूएवी का उपयोग करते हुए वृक्षारोपण स्थलों का हवाई सर्वेक्षण पहली बार एक अभिनव विचार के रूप में अपनाया गया। सर्वेक्षण में यह पता चला कि आसानी से सुलभ क्षेत्रों में वृक्षारोपण गतिविधियों की एकाग्रता थी, जैसे कि रास्ते के साथ भूमि, घने जंगल के बीच में अवक्रमित पैच को छोड़कर। इसके अलावा, मिट्टी की नमी संरक्षण गतिविधि जैसी कंपित खाइयों को खोदना या तो शुरू नहीं किया गया था या अक्षम रूप से निष्पादित किया गया था जिसके परिणाम स्वरूप वृक्षारोपण विफल हो गया था। लेखापरीक्षा के इस नवोन्मेषी दृष्टिकोण की भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय द्वारा काफी सराहना की गई। यह लेखापरीक्षा द्वारा ऐसे कई खूबसूरत निष्कर्षों की सूची से केवल एक उदाहरण है जो सरकारी योजनाओं के अनुचित कार्यान्वयन और संसाधनों के गलत उपयोग पर प्रकाश डालता है। ऑडिट रिपोर्ट सूचनाओं का भंडार है और भविष्य में सुधारात्मक कार्यवाही के लिए एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। यह लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण तत्व होने के नाते, कार्यपालिका द्वारा की गई खामियों के बारे में हितधारकों को जागरूक करती है।

इस उत्साहजनक पृष्ठभूमि के बावजूद, हमें भारी मन से यह स्वीकार करना होगा कि अधिकांश आम जनता और हमारी नई पीढ़ी के लेखापरीक्षकों को लेखापरीक्षा रिपोर्ट की सामग्री के बारे में जागरूकता की कमी है जो हर साल बहुत प्रयास करने के बाद प्रकाशित की जा रही है। यह समय है कि

सुरभि 2023

विभाग के युवा अधिकारियों को पुरानी ऑडिट रिपोर्ट से प्रेरणा लेकर वरिष्ठों के संरक्षण में अपने नवीन विचारों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में उद्यम करने के लिए शामिल किया जाए। इसके अलावा, हम विधायिका में रिपोर्ट पेश करने से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करने के नियमित अभ्यास के अलावा लेखापरीक्षा निष्कर्षों को हितधारकों तक पहुँचाने के लिए नए विचारों के बारे में सोच सकते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचार और डेटा के विश्लेषण के लिए उपलब्ध विभिन्न उपकरणों के साथ,

लेखापरीक्षा रिपोर्ट सरकार द्वारा योजनाओं के प्रभावी, कुशल और आर्थिक कार्यान्वयन में खामियों को खोजने के क्षेत्र में चमत्कार कर सकती है। इसलिए एक समृद्ध भौगोलिक विरासत और पिछली लेखापरीक्षा रिपोर्टों की पृष्ठभूमि में, आइये आज हम सभी शपथ लें कि हम अपनी आगामी रिपोर्टों को अपनी सर्वोत्तम क्षमताओं के साथ समृद्ध करेंगे और वांछित उपयोगकर्ताओं को प्रभावी ढंग से निष्कर्षों को प्रसारित करेंगे ताकि देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत किया जा सके।



कदमपुर खादी

श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर



कदमपुर खादी, भद्रक जिला, ओडिशा, भारत में स्थित एक प्राकृतिक जलस्थल है। यह स्पोर्ट भद्रक नगर के पास स्थित है जो प्रसिद्ध पिकनिक स्थल है। यह एक प्राकृतिक स्थल है जो वन्यजीवों के लिए एक महत्वपूर्ण आवास है और पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। यह एक बड़ा नैदानिक तालाब है जो शांतिपूर्ण जलक्रीड़ा और मनोरंजन का स्थल है। यह खादी (क्रीक) विशाल और शांतिपूर्ण जलस्थल है जो पर्यटकों के बीच लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। कदमपुर खादी में सूर्यास्त और सूर्योदय का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है, जिसे देखने के लिए पर्यटक यहाँ आते हैं।

कदमपुर खादी की विशेषताएँ:

- 1. नैदानिक तालाब:** कदमपुर खादी एक बड़ा तालाब है जिसमें पानी की सतह बहुत बड़ी होती है। यहाँ पर्यटक शांतिपूर्णता का आनंद उठाते हैं।
- 2. जलक्रीड़ा:** कदमपुर खादी एक बड़ी झील है जो शांतिपूर्ण और मनोरंजक वातावरण प्रदान करती है। यहाँ आने वाले लोग जल में तैरने, नौका विहार और जलयात्रा का आनंद उठाते हैं। यहाँ जलक्रीड़ा और नौका विहार के लिए अच्छी सुविधाएँ होती हैं। यहाँ पर कैनोइंग, जेट स्कीइंग आदि की भी गतिविधियाँ की जाती हैं।
- 3. पिकनिक और आवक:** यह स्थल पिकनिक के लिए बहुत ही आकर्षक है और लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ यहाँ आकर समय बिताते हैं। यह पिकनिक यात्रियों के बीच बहुत लोकप्रिय है। यह स्थल प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है, जो

आत्मा की शांति और स्वानुभव की अनूठी स्थिति में ले जाता है।

4. बूट क्यूँ घाट: यहाँ पर बूट यात्रा का आयोजन किया जाता है, जिसमें आप बोट में बैठकर झील की तरफ जा सकते हैं और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले सकते हैं। कदमपुर खादी का समुद्र तट बेहद सुंदर है और यहाँ पर सफेद और नीले जल का दृश्य देखने को मिलता है।

5. पक्षी दर्शनीयता: कदमपुर खादी विविध प्रकार के पक्षियों के लिए एक आदर्श स्थल है। यह विविध वन्यजीवों और पक्षियों के लिए एक आदर्श आवास है। यहाँ पर आपको बाघ, सांभर, चित्रकूट, कोलकोल, कोयल, बारहसिंगा, और अन्य प्रजातियों के साथ-साथ विभिन्न पक्षियों को भी देखने का मौका मिलता है।

6. प्राकृतिक सौंदर्य: कदमपुर खादी के चारों ओर घने वन्यजीवों से भरी प्राकृतिक वातावरण है, जो आपको शांतिपूर्णता और सुकून का अनुभव करने का मौका देता है।

7. नैचुनिया पीठ: कदमपुर खादी के पास एक छोटी सी पहाड़ी है जिसे "नैचुनिया पीठ" कहा जाता है। यहाँ से आप खादी का खूबसूरत दृश्य देख सकते हैं।

8. फोटोजेनिक दृश्य: कदमपुर खादी के पास अनेक सुंदर दृश्य होते हैं, जो फोटोग्राफी के प्रेमियों के लिए आकर्षक होते हैं। खादी के किनारे वन्यजीवों की देखभाल की जाती है और यहाँ आपको पक्षियों, जानवरों, और प्राकृतिक जीवों के साथ आपसी संवाद का अवसर मिलता है। यहाँ आसपास प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर दृश्य हैं। यहाँ के पेड़-पौधों, जलप्रपातों और

फूलों की खासियत आपको मोहित करेगी।

9. धार्मिक स्थल: कदमपुर में एक प्राचीन मंदिर भी है, जो आध्यात्मिक आकर्षण का केंद्र है।

10. स्थानीय संग्रहालय: खादी के पास स्थित स्थानीय संग्रहालय में आपको स्थानीय वन्यजीवों और पक्षियों के बारे में जानकारी मिलती है।

11. नैचू सेन्क्चुरी: कदमपुर खादी में नैचू सेन्क्चुरी नामक एक छोटी जगह है जहाँ पर आपको अनेक प्रकार के बर्ड वॉचिंग का आनंद मिलता है।

12. बेतनी घर द्वीप: कदमपुर खादी में बेतनी घर द्वीप नामक एक द्वीप है जिसे आप बोट यात्रा के माध्यम से पहुँच सकते हैं। यहाँ पर स्वच्छ समुद्र और समुद्री जीवन का आनंद लेने का मौका मिलता है।

13. नैचुनी यात्रा: कदमपुर खादी में प्रत्येक वर्ष नैचुनी यात्रा

मनाई जाती है, जिसमें भगवान बुद्ध के आदर्शों को समर्पित उत्सव शामिल होता है। यह उत्सव स्थानीय और आस-पास के लोगों के बीच बड़े उत्साह से मनाया जाता है।

14. सुरक्षित स्थान: कदमपुर खादी एक सुरक्षित स्थान है जहाँ पर पर्यटकों के लिए उपयुक्त सुरक्षा व्यवस्था है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि कदमपुर खादी भद्रक का एक आरामदायक एवं आकर्षक स्थल है। यहाँ पर प्राकृतिक खूबसूरती, जलस्थल का आनंद और शांतिपूर्ण वातावरण आपको यादगार अनुभव प्रदान करते हैं। यह पर्यटकों को प्राकृतिक सौंदर्य और शांति का अनुभव कराता है। यह प्राकृतिक और आध्यात्मिक आकर्षण के लिए एक आदर्श स्थल है। यहाँ पर आप अपने परिवार और दोस्तों के साथ मनोरंजन का आनंद ले सकते हैं और शांतिपूर्ण वातावरण में आराम कर सकते हैं।



हमारी राजभाषा हिंदी

श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



कहते हैं कि सीखना जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है और हम जन्म से मृत्यु तक कुछ ना कुछ सीखते रहते हैं फिर चाहे वो हमारी माँ द्वारा हमें सुलाने के लिए गाथी गई लोरी हो या पिता द्वारा हमें सुधारने के लिए लगाई गई डांट। स्कूली शिक्षा से पहले जो कुछ भी हम सीखते हैं या अनुभव करते हैं वो हमारी क्षेत्रीय भाषा या बोली में होता है। यह क्षेत्रीय भाषा या बोली किसी एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित होती है। किसी अन्य क्षेत्र में जाने पर हम विचारों के आदान प्रदान या सम्प्रेषण के लिए उस भाषा का प्रयोग करते हैं जो एक संपर्क भाषा के रूप में दोनों पक्षों द्वारा समझी जा सके जो कि हमारी हिंदी भाषा है।

संविधान सभा ने लम्बी चर्चा के बाद भारत में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा समझी और बोली जाने वाली हिंदी को 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा का दर्जा दिया। जिसका उल्लेख संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 (1) में किया गया है। इसीलिए 14 सितम्बर को हर वर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हम सभी को हिंदी भाषा के इतिहास का पता है। हिंदी दीर्घकाल से ही अखंड भारत में जन-जन के पारस्परिक संपर्क भाषा रही है। पुराने समय से ही हिंदी भाषा का उपयोग होता रहा है। भक्ति काल से, पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक अनेक संतों ने हिंदी भाषा का प्रयोग अपनी लेखनियों में किया है। अहिंदी कवि जैसे दक्षिण भारत से वल्लभाचार्य, रामानुज, रामानंद, असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर एवं नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य आदि संतो और

कवियों ने हिंदी भाषा में अपने मतों का प्रचार किया एवं अपनी रचनाएँ लिखीं।

हम देखते हैं कि जैसे जैसे हमारा समाज विकास की ओर अग्रसर हो रहा है वैसे-वैसे पश्चिम संस्कृति का असर हमारे जीवन पर देखने को मिल रहा है जो की अंग्रेजी भाषा के रूप में है। हम विकसित होने के नाम पर हमारी जड़ों को भूलते जा रहे हैं। आज अगर हम घर से बाहर निकल कर देखें तो दुकानों के होर्डिंग्स, कंपनियों के विज्ञापन, हमारे स्मार्ट फ़ोन की भाषा, यहाँ तक कि परीक्षाओं के पेपरों में भी अंग्रेजी भाषा को उत्तम माना जाता है। यदि पेपर में कोई त्रुटि पाई जाती है तो अंग्रेजी संस्करण को मान्य किया जाने का निर्देश होता है। फ़िल्मी जगत के जाने माने अभिनेता जिनसे पूरा समाज प्रभावित होता है वे अपनी हिंदी फिल्म के प्रमोशन के लिए अंग्रेजी में इंटरव्यू देते हैं और ये सब कहीं ना कहीं इस बात पर इशारा करता है कि हमारी अपनी संपर्क भाषा हिंदी को महत्व ना देते हुए हम विदेशी भाषा को महत्व दे रहे हैं, हमें ये भ्रम है कि अगर हम हमारी क्षेत्रीय भाषा या राजभाषा हिंदी में बात करेंगे तो हमें इतना महत्व नहीं दिया जायेगा जितना अंग्रेजी भाषा में बात करने पर दिया जायेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी किसी के लिए भी अज्ञात नहीं हैं, ना तो भारत में, ना विदेश में। 1912 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के एक भाषण में गांधीजी ने युवा कॉलेज के छात्रों को संबोधित करते हुए भाषा को स्वयं का प्रतिबिंब बताते हुए छात्रों से किसी विदेशी भाषा में महारत हासिल करने के स्थान पर हिंदी को शालीनता से स्वीकार करने की बात कही थी। उन्होंने ये भी कहा कि अखिल भारत के परस्पर

व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता हो।।

1977 में भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्रसभा में सर्वप्रथम हिंदी में भाषण देकर भारत एवं हिंदी को गौरवान्वित किया था तथा वर्तमान प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी ने हाल ही में संयुक्त राष्ट्र सभा में हिंदी में भाषण देकर भारत का मान-सम्मान पूरे विश्व पटल पर ऊँचा किया जिससे पूरा देश गौरवान्वित महसूस कर रहा है। महान कवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपने सुंदर शब्दों में सच ही कहा है कि:-

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल,
निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के सूल।

अर्थात् खुद की भाषा की उन्नति के बिना किसी भी देश की उन्नति संभव नहीं तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा कभी दूर नहीं हो सकती। जब हमारे महापुरुष और देश के गौरव कहलाये जाने वाले लोग राजभाषा हिंदी को इतना मान दे रहे हैं, सरकार राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में इतना धन खर्च कर रही है, प्रत्येक वर्ष बहुत उच्च स्तर पर राजभाषा सम्मलेन का आयोजन किया जा रहा है तो हमें भी हमारी राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए तथा यह सन्देश जन-जन तक पहुँचाना चाहिए कि राजभाषा हिंदी की प्रगति में ही देश की प्रगति निहित है।



मुंबई- कभी न रुकने वाला शहर!

सुश्री संयुक्ता जड़िया,
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



"मुंबई" ये शब्द सुनते ही हमारी आँखों के सामने एक चकाचौंध से भरे शहर के दृश्य की परिकल्पना होती है। परंतु मुंबई नगरिया के विषय में यह पूर्णतया सत्य नहीं है। एक ऐसा शहर जहाँ दिन-रात लोग आपा-धापी करते हुए, पसीना पोंछते हुए, एक दूसरे के पीछे बस भाग रहे हैं। इस शहर में दिन और रात का कोई अंतर समझ नहीं आता। ऐसे ही नहीं यह देश की आर्थिक राजधानी बनी। यहाँ इन्सान को इन्सान की दृष्टि से कम और संसाधन की दृष्टि से ज्यादा देखा जाता है। लोगों को नफा-नुकसान में तोलता यह शहर कभी नहीं रुकता और न ही किसी को रुकने देता है— चाहे आँधी आए, तूफान आए, बाढ़ आए या आतंकवादी हमला ही क्यों न हो, लोग अगले दिन अपने काम पर निकल ही पड़ते हैं। अब चाहे इसे आप यहाँ का जज्बा कहें या मजबूरी। रुके रहने वालों के लिए यह शहर है ही नहीं, यहाँ जीने के लिए आपको इस शहर की गति से गति मिलानी ही पड़ेगी। रोज सुबह, लोकल ट्रेन के बिछे जाल पर दौड़ती रेल गडियों को अपने यथा समय पर पकड़ने के लिए इंसानों की सुबह-सुबह एक लम्बी कतार आपको स्टेशनों के बाहर देखने मिलेगी जिनमें से लोग या तो स्टेशन से आ रहे होते हैं या जा रहे होते हैं। एक के पीछे एक बतखों की भांति बस चलते रहते हैं। शाम को यह नजारा ठीक इसका उल्टा होता है। काम से आते-जाते लोगों को देखने पर आपको जीवन के अलग-अलग पहलुओं का आंकलन करने को मिलता है। किसी के चेहरे पर काम की थकान तो किसी के चेहरे पर घर वापसी की खुशी, किसी के चेहरे पर हताशा तो किसी के चेहरे पर चमक। सभी के चेहरों पर दिनभर के अनुभवों की परछाईं लेकिन इस सब के बीच जो एक चीज सबके चेहरों पर समान है वो है कभी न रुकने का जज्बा।

जीवन के हर पहलू व अनुभवों को संजोते इस शहर की एक खासियत यह भी है कि यह हर संस्कृति, सभ्यता को खुल कर गले लगाता है। यहाँ जो भी प्रवासी आता है यह शहर सबका स्वागत करता है। ऐसे ही नहीं यह एक सफल कॉस्मोपॉलिटन शहर है। यहाँ संस्कृतियों एवं सभ्यताओं का एक अलग ही संगम देखने को मिलता है। एक सोसायटी में जितनी धूम-धाम से गणपति उत्सव मनाया जाता है उतनी ही श्रद्धा से दुर्गापूजा भी, पोंगल के साथ-साथ क्रिसमस और नए साल की धूम भी देखने को मिलती है। यहाँ जन्माष्टमी पर गोविंदाओं की टोलियों का उत्साह भी देखते ही बनता है। मुंबई का दही हांडी महोत्सव देश विदेश में प्रसिद्ध है। टीवी पर भी इसका प्रसारण किया जाता है। 50-50 फिट ऊँची दही हांडियों को फोड़ने के लिए एक बड़ा सा झुंड बस अपनी पूरी ऊर्जा एकत्रित कर, वांछनीय रणनीति के साथ एक के ऊपर एक खड़े होकर अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयास करते हैं। इन गोविंदाओं की लगन व उत्साह के पीछे एक गहरी सीख भी छिपी हुई है कि कैसे हमें गिर कर उसी उत्साह व ऊर्जा के साथ फिर खड़े होकर प्रयत्नशील एवं लगनशील रहना चाहिए और लक्ष्य प्राप्ति तक अपने पथ पर अग्रसर होकर दृढ़ रहना चाहिए।

यहाँ की लोकन ट्रेन जिनकी संख्या लगभग 3000 है, जो रोजाना लगभग 75 लाख यात्रियों को अपने गन्तव्य तक पहुँचाती है यह भी अपने आप में एक चलता-फिरता शहर है जो 24 घण्टे बस बिना रुके बिना थके चलती ही रहती है, लोगों से खचाखच भरी रहती है जहाँ हर जाति, संप्रदाय, मजहब, रंग-रूप, व्यवसाय के लोग सफर करते हैं। ट्रेनों का माहौल भी देखने लायक होता है। मुंबई की लोकल ट्रेन में

चढ़ना और उतरना भी एक कला है। आपको सफर करने के लिए यह कला सीखनी ही पड़ती है और जितना जल्दी सीख लें आपके लिए उतना अच्छा है वरना जिस ट्रेन में नहीं चढ़ना था उसमें चढ़ा दिए जाओगे और जहाँ नहीं उतरना वहाँ उतार दिए जाओगे। सुबह के समय कुछ लोग ट्रेन में अपना प्रेजेंटेशन बनाते दिखेंगे तो कुछ नास्ता करते, कुछ महिलाएं बाल झाड़ते दिखेंगी तो कुछ घर के काम की भागदौड़ में समय न मिलने पर ट्रेन में ही पाठ करती, माला जपती या नास्ता करती। कई ट्रेनों में ऐसा भी होता है कि लोग पूरे गाजे-बाजे के साथ ट्रेन में सफर करते हैं जो पूरे रास्ते भजन-कीर्तन या फिल्मी गीत गाते हुए जाते हैं। शाम के समय इस दृश्य में कुछ परिवर्तन हो जाते हैं- कुछ लोग रात के खाने की तैयारी करते हुए सब्जियाँ काट रहे होते हैं तो कुछ स्वेटर बुन रहे होते हैं। ज्यादातर लोगों के चेहरों पर दिनभर की थकान साफ नजर आती है। ट्रेनों में घर के सामान से बनी खाने की चीजें (जैसे-लड्डू, चिवड़ा, केक आदि) और कपड़े व झुमका बेचने के लिए फेरी वाले भी उसी भीड़ में अपने लिए जगह बना लेते हैं। यह तो हुआ कहानी का एक पहलू जो मनोरंजन और सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत है इसका एक दूसरा पहलू भी है कि इन ट्रेनों के डिब्बों में क्षमता से ज्यादा लोग सफर करते हैं। लगभग दोगुने से भी ज्यादा। जिस कारण आपको सफर के दौरान घुटन का सामना करना पड़ता है। सीट के लिए मारामारी। कई बार तो सुबह के समय एवं शाम के समय ट्रेन में घुस पाना ही अपने आप में किसी उपलब्धि से कम नहीं होता। कई लोग गेट पर लटक कर यात्रा कर रहे होते हैं इनमें महिलाएं भी शामिल होती हैं। हम प्रायः मुंबई लोकल की वीडियो सोशल मीडिया पर देखते ही रहते हैं। कभी ट्रेन में गा-बजाकर अपनी थकान को मिटाने की कोशिश तो कभी गाली-गलौच और मार-पीट कर अपने बॉस की झुंझलाहट दूसरे यात्रियों पर निकालने की। कई बार ये झगड़े इतना विकराल रूप ले लेते हैं कि पुलिस को बुलाने तक की नौबत आ जाती है। लेकिन इन सब के बीच एक चीज

नहीं रुकती तो वो है यहाँ के लोगों का उत्साह और जुनून। इन लोकल ट्रेनों के किस्से यहीं तक नहीं रुकते ये कई बार आपको जिंदगी भर के लिए सच्चे दोस्त दे जाती है तो कई लोगों को तो उनके जीवन साथी से ही मिला देती है। इन घटनाओं पर आधारित कई फिल्में भी बन चुकी हैं। ये लोकल ट्रेन एक और अच्छे गुण का समावेश करने का काम करती है जिसके बारे में बात तो सभी करते हैं परंतु आत्मसात बहुत ही कम लोग करते हैं, वो है सभी के काम के प्रति सम्मान एवं समानता का भाव, ऊँच-नीच की भावना न रखने का भाव। लोकल ट्रेन में समाज का प्रत्येक वर्ग एक साथ सफर कर रहा होता है। चाहे वह मजदूर हो या कियी कार्यालय का चपरासी या अधिकारी। इसमें चढ़ते ही सारे भेद खत्म यहाँ सभी सिर्फ और सिर्फ यात्री ही हैं न कोई अधिकारी न कोई चपरासी।

यहाँ की खासियत है कि यहाँ जितनी तादाद में पुरुषों की भीड़ दिखती है, लगभग उतनी ही महिलाएं भी हैं। इस शहर में कामकाजी महिलाओं की संख्या अधिक देखने को मिलती है। कामकाजी महिलाओं से तात्पर्य यह नहीं कि सभी सिर्फ ऑफिस ही जा रही हैं- कोई डांस सिखाने निकलती हैं, कोई दूसरे घरों में घरेलु काम में सहयोग करने, कोई ऑटो रिक्सा चलाने तो कोई ट्रेन चलाने या प्लेन उड़ाने, कोई अभिनय करने हेतु तो कोई स्टेशनों के बाहर पोहा-उपमा के स्टॉल लगाने ताकि आने-जाने वाले अपनी शाम की चाय के साथ-साथ घर का बना हुआ पौष्टिक नाश्ते का भी आनंद उठा सकें। यहाँ के लोगों में काम करने का और पैसे कमाने का एक अलग ही जज्बा देखने को मिलता है। इसका एक और कारण है यहाँ जीवन यापन हेतु होने वाला खर्च, जो एक आदमी की आमदनी से पूरा कर पाना मुश्किल होता है। यहाँ के लोगों की खासियत है कि ये किसी काम को करने में झिझकते नहीं, शर्माते नहीं, काम को काम की दृष्टि से देखते हैं। लेकिन काम की तलाश में यहाँ रोज हजारों लोग आते हैं क्योंकि यहाँ हर वर्ग और स्तर एवं लगभग हर फील्ड का

काम मौजूद है। जिस कारण यहाँ भीड़ बढ़ती ही जा रही है। हर शहर की अपनी क्षमता होती है लेकिन मुंबई में उसकी क्षमता से ज्यादा जनसंख्या रहती है जितनी जनसंख्या एक छोटे राज्य की हो सकती है। 2011 की जनसंख्या गणना के अनुसार इसकी कुल जनसंख्या लगभग 2.5 करोड़ है और 2023 के आंकड़े इसको भी पार कर देंगे। हर राज्य एवं शहर के पास अपने सीमित संसाधन होते हैं जो वह अपने राज्य व शहर में रहने वालों को उपलब्ध कराता है परंतु क्षमता से दोगुनी व तीन गुनी जनसंख्या का भरण-पोषण और संसाधनों को हर किसी के लिए समान रूप से उपलब्ध करा पाना मुश्किल है जिसकी झलक इस शहर में साफ देखने को मिलती है जिसका सबसे बड़ा उदाहरण है यहाँ पर घरों के आसमान छूते दाम। जो आम आदमी की पहुँच से बाहर हो जाते हैं यही एक कारण है यहाँ पर इतनी बड़ी झोपडपट्टी "धारावी" होने का। यह दुनिया की सबसे बड़ी झोपडपट्टियों में से एक एवं एशिया की सबसे बड़ी झोपडपट्टी है। दूसरे गांव एवं शहरों से आने वाले मजदूर या फैक्ट्रियों में काम करने आए लोग ज्यादातर यहीं रहते हैं क्योंकि जितनी उनकी वेतन होती है जिसमें से कुछ हिस्सा उन्हें अपने घर भी

भेजना होता है, वो यहीं गुजर-बसर कर सकते हैं। कहने को यह एक झोपडपट्टी है लेकिन छोटे से लेकर बड़े उद्योग आपको यहाँ देखने को मिलेंगे जो यहाँ घर-घर से चलाए जा रहे हैं जैसे- रोटियों, चप्पल, बेल्ट, पर्सी, खिलौने आदि बनाने का। आश्चर्य की बात है कि यह केवल 2.39 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ एरिया है लेकिन यहाँ लगभग 10 लाख लोग रहते हैं। सोचिए कैसे रह रहे होंगे ये लोग। कई घर तो 10*10 वर्ग फिट के होते हैं, जिनमें पूरा परिवार रहता है और गजब की बात तो यह है कि इनके घरों में आपको टी.वी., फ्रिज यहाँ तक कि ए.सी. भी मिलेगा। बाहर से काम की तलाश में आए लोग इन घरों में किराए से रहते हैं। इतना ही नहीं यहाँ किराए पर भी इस तरीके से दिया जाता है कि दिन में और रात में अलग-अलग शिफ्ट में काम कर रहे लोगों के बीच दिया जाता है। जो रात में काम करता है वह दिन में इस कमरे का उपयोग करता है और जो दिन में काम पर जाता है वह रात में उपयोग करता है। रोजाना हो रहे उतार-चढ़ावों के बीच, इतनी समस्याएं होने के बावजूद भी यह शहर निरंतर चलते रहने और जीवन का भरपूर आनंद उठाने का संदेश देता है। इस शहर का एक अलग ही चार्म है जो किसी और शहर में देख पाना नामुमकिन है।



सब से महान धर्म

सुश्री तितली पंडा, कक्षा-XII
सुपुत्री श्री गंगाधर पंडा, सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



अगर आप अपने आस-पड़ोस में लोगों से पूछें कि इस दुनिया में सबसे महान धर्म कौनसा है तो जवाब में कोई कहेगा सनातन धर्म सब से महान धर्म है, तो कोई कहेगा इस्लाम, तो कोई कहेगा सिख, तो कोई कहेगा इसाई आदि। वैश्विक जनसंख्या के सर्वेक्षण के अनुसार यदि देखा जाए तो पूरे विश्व में इसाई धर्म को मानने वाले ज्यादा लोग हैं, जिस के बाद अन्य धर्म आते हैं। क्या हम जनसंख्या के आधार पर किसी भी धर्म को सब से महान धर्म कह सकते हैं? या फिर इसके कुछ और भी मानक या मापदंड हैं?

सर्वप्रथमतः यह जानने कि कोशिश करते हैं कि धर्म क्या है? धर्म वो है जो किसी प्राणी को जीने का सही राह दिखाए, उसे वो मार्ग दिखाए जिससे वो अपने जीवन के (चरम) उद्देश्य को प्राप्त कर सके। उदाहरणतः यदि किसी जानवर की बात करें तो उसके लिए उचित धर्म यही है कि वो अपने जीवन में अपने चेतन के अनुसार समय पर खाद्य संग्रह करे, सोये-उठे, अपने प्रजाति को कायम रखने के लिए प्रजनन करे और समय आने पर अपना शरीर त्यागे परंतु मनुष्य बाकी जानवर से भिन्न है। मनुष्य का शरीर में लगभग वही है जो कि अन्य जानवरों में पाया जाता है। फर्क सिर्फ चेतना तथा बुद्धि के स्तर पर होता है। जानवरों में चेतना है, वे अपने आस-पास वातावरण को महसूस करते हैं तथा उसी के हिसाब से प्रतिक्रिया करते हैं जबकि मनुष्य के पास इसके अलावा आत्म-चेतना की शक्ति भी है-जिस से उसे पता रहता कि वो कब, क्या, कैसे और क्यों कर रहा है।

यही आत्म-चेतना मनुष्य को आगे चल कर कोई लक्ष्य पाने के लिए प्रेरित करती है, जिसके लिए उसे चुनना

होता है स्वयं के लिए एक उचित मार्ग- एक मार्ग जो उसे समय रहते सुलभ तरीके से अपने जीवन के मूल उद्देश्य को पूर्ण करने में मदद कर सके, ताकि उसका जीवन इस धरती पर सफल रहे। इसलिए मनुष्य अपने धर्म पर विश्वास करता है, क्योंकि यह उसका अपने धर्म पर विश्वास ही है जो कि उसे अपने जीवन के उद्देश्य को ढूंढने से लेकर उसे पूरा करने तक का मार्ग दिखाता है। यदि आप किसी भी धर्म का अवलोकन करेंगे, तो आप जानेंगे कि सारे धर्म के कुछ नियम अनुपालन करने के लिए, कुछ विहित कर्तव्य करने के लिए दिशा निर्देश रहता हैं- जिनको अनुकरण करने पर मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। जैसे कि सनातन धर्म की बात करें, तो सनातन धर्म हमें भगवान को साकार या निराकार रूप में मानने की स्वतंत्रता के साथ उनकी पूजा-पाठ के द्वारा मन में उनके प्रति विश्वास और आस्था रखकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की बात कहता है। सनातन धर्म में हम वो सारे विहित कर्तव्य का अनुकरण करते हैं जिसको संक्षिप्त रूप से भगवान श्रीकृष्ण ने द्वापरयुग में श्रीमद् भगवद्गीता में बताए थे। पौराणिक कथाओं के द्वारा जीवन को उत्तम तरीके से जीने की सीख भी मिलती है। इस तरह से लोग इस्लाम धर्म में पैगंबर मोहम्मद, सिख धर्म में गुरु नानकजी, इसाई धर्म में यीशु मसीह आदि के द्वारा बताए गए विहित कर्तव्य को अनुकरण करते हुए अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते हैं।

यह तो धर्म के बारे में एक छोटा सा सार है परंतु सवाल यह है कि सब से महान धर्म कौनसा है? एक महान धर्म वो है जिसका अनुसरण सब कर सकें चाहे कोई भी अपनी पसंद के धर्म का पालन कर रहा हो, उसे किसी भी आयु सीमा,

आरक्षण, नीतियों, रीतियों, लिंग की भेदभाव की आवश्यकता नहीं है सिवाय इस तथ्य पर कि एक सर्वोच्च इकाई (शक्ति) पर शुद्ध प्रेम और विश्वास, यानी सबका मालिक एक और उनके रूप अनेक।

प्रत्येक धर्म का लक्ष्य या उद्देश्य का मूलमंत्र (motto) यानी सिद्धांत, विश्वास और प्रेम होता है। उस महान धर्म का बात यहाँ की जा रही है, जिसने सारे धर्म के लोगों को एक प्रेम का डोर से बांध दिया। उस महान प्रेम की बात यहाँ की जा रही है जिस के चलते समय आने पर स्वयं स्त्रियों ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया था। ऐसा प्रेम जो अलग-अलग धर्म के लोगों को हर विकट परिस्थिति में एकजुट रहने का बल देता है, प्रत्येक मनुष्य और अन्य जीवों के जीवन की स्वतंत्रता का सम्मान करता है। उस धर्म में सब लोग बराबर हैं और उन सभी लोगों का सुरक्षा सुनिश्चित है। यह वही धर्म है जो कि देशप्रेम और इंसानियत पर आधारित है। हमारे देश भारतवर्ष में हिंदु, मुसलमान, जैन, क्रिश्चियन, सिख आदि धर्मों के लोग रहते हैं। अनेकता में एकता हमारे देश की एक प्रमुख विशेषता है जिसके कारण सारे विश्व अचंभित स्थिति में है कि इतने सारे धर्म के लोग (कुछ अपवाद को छोड़ कर) भारत में कैसे मिलजुल कर रहते हैं। इसकी वजह जानने से पहले हमें स्वतंत्रता संग्राम के पहले की बात पर थोड़ी नजर डालना ठीक होगा।

इतिहास साक्षी है भारत में हर बार ऐसा अवसर आया जब भी बात देश पर आई है, सभी ने अपना धर्म भूलकर सिर्फ भारत को अपना धर्म माना और एकजुट हो कर अपने देश के लिए बहुत सारे काम किये जिससे पूरी दुनिया के सामने एक मिसाल कायम की कि 'अनेकता में एकता' भारत की एक प्रमुख विशेषता है। भारत जब अंग्रेजों के अधीन रहा तभी उपर्युक्त सभी धर्म के लोगों ने अंग्रेजों को खदेड़ने के लिए मिलजुल कर अंग्रेजों के खिलाफ संग्राम किया। जहाँ महात्मा गांधीजी की अगुवाई में स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ वहीं दूसरी

और खान अब्दुल गफ्फुर खान जो की सीमांत गांधी के नाम से मशहूर हैं उन्होंने महात्मा गांधीजी का साथ दिया तथा उन्होंने भी महात्मा गांधीजी की तरह अंग्रेजों के जुल्म सहे और जेल भी गये। ऐसे ही अन्य धर्मों के नेता और लोगों ने भी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया जिनके संघर्ष और बलिदान से भारत स्वतंत्र हुआ। नवीनतम उदाहरण चंद्रयान-3 के सफल अवतरण के लिए वैज्ञानिकों की मेहनत के साथ-साथ विभिन्न जगह जैसे लखनऊ और मुम्बई में सामूहिक नमाज पाठ और यज्ञ किया जाना भारत की अनेकता में एकता का प्रमाण देता है।

हमारे देश में हर धर्म के लोग एक-दूसरे के त्योहारों में शरीक होते हैं और सब त्योहारों को साथ-साथ मनाते हैं। यहाँ हर इंसान को अपना धर्म चुनने और मानने की आज़ादी है। कई लोग तो एक धर्म का अनुकरण करते हुए भी अन्य धर्मों के पूजास्थल पर जाते हैं और अपना माथा टेकते हैं। जिस प्रकार हर धर्म में अपने भाव को व्यक्त करने के लिए एक निर्दिष्ट भाषा होती है, वैसे ही देशभक्ति की भी एक भाषा है-हम भारतवासियों की एक राजभाषा-हिंदी भाषा। यह वो भाषा है जो स्वतंत्रता संग्राम के लिए एकता की आधार बनी और हमें अंग्रेजों से आज़ादी दिलवाई।

भारत के विद्यालयों तथा अन्य शैक्षणिक अनुष्ठानों में सभी धर्मों के बच्चे साथ में पढ़ते हैं। सभी बच्चों को भारत के इतिहास से अवगत कराया जाता है। अलग-अलग धर्मों के बच्चे एक साथ अलग-अलग शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। इससे फ़ायदा यह होता है कि बच्चों को अलग-अलग धर्मों से कुछ ना कुछ नया सीखने को मिलता है, जो उन्हें अपने जीवनकाल में मददगार साबित होता है। साथ ही बच्चों को महान देशभक्तों के द्वारा लिखे हुए गाने सिखाए जाते हैं, जिससे बच्चों के मन में देश के लिए कुछ अच्छा कर गुजरने का जजवा बना रहता है।

भारत का एक स्वतंत्र देश से एक विकासशील देश में परिणित होना, एशिया महादेश के पहला परमाणु रिएक्टर 'अप्सरा' को बनाने से लेकर पोखरण में परमाणु विखंडन 'स्माईलिंग बुद्ध' का परीक्षण करना तथा सात परमाणु ऊर्जा प्लांट का निर्माण करना, शिवर बापूजी तलपदे के पल्लव विमान "मरुतसखा" से लेकर हलके युद्ध विमान 'तेजस' का निर्माण तक, इसरो की पहला ध्वनि रॉकेट आर-एच-75 से लेकर पीएसएलवी, जीएसएलवी जैसे रॉकेट के निर्माण तथा मंगलयान और चंद्रयान-3 तक का सफल प्रयोग तक, अंग्रेजों से आजादी पाने से लेकर अमेरिका, रूस, संयुक्त राष्ट्र संघ, संयुक्त अरब आदि देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संपर्क सौहार्द से स्थापित करना, क्रिकेट, हॉकी आदि खेल में दुनिया में इतिहास रचना, भारतीय संस्कृति और कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक ले जाना, भारतीय सेना का स्वर्णिम इतिहास- जैसे भारत-पाकिस्तान युद्ध 1971 में पाकिस्तान की करारी हार के बाद स्वतंत्र बंगलादेश का जन्म लेना, कारगिल युद्ध में भारत की विजय आदि बताती है कि हम सभी ने भारत को ही अपना धर्म माना चाहे हम हिंदू हो या मुसलमान, जैन हो या क्रिश्चियन, सिख आदि।

प्रत्येक धर्म अपने विहित कर्तव्य और उससे जुड़ी धार्मिक पुस्तकों के द्वारा मनुष्य जाति को न सिर्फ सही तरह से जीने की सीख दी है, बल्कि वह प्रत्येक मनुष्य जो अपने धर्म का सही से अनुसरण करता है, उसके मन में विश्वास और प्रेम की मजबूत नींव बनाई है-जिससे मन को शांति और बल मिलता है, ताकि इंसान अपने जीवन में आगे बढ़ता रहे। ऐसे बहुत सारे उदाहरण मिल जाएंगे जो यह दर्शाते हैं कि भारत एक देश ही नहीं बल्कि एक धर्म भी है। यहाँ उस धर्म को माना जाता है जो इंसानियत, शांति तथा अनेकता में एकता पर विश्वास रखता है। कुछ अपवाद को छोड़ दें तो कई ऐसी मिसालें हैं जो बताती हैं कि कोई भी बाह्य शक्ति हमारे देश में एक दूसरे में झंडप या मनमुटाव पैदा नहीं कर सकती। स्वतंत्रता के पश्चात बाबासाहेब आंबेडकर के द्वारा बनाये गए संविधान में यह प्रावधान रहा कि भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है और यह किसी एक धर्म या जाति का संरक्षण नहीं करता है। देश में रहनेवाले हर नागरिक को एक दूसरे के धर्म या जाति के प्रति सहानुभूति और सहिष्णुता रखना अनिवार्य है ताकि देश चहुँमुखी उन्नति कर सके।



चंद्रयान-3 मिशन की सफलता पलट देगी इकोनॉमी, रॉकेट की तरह आगे बढ़ेगी भारतीय अर्थव्यवस्था

श्री अमित प्रधान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ओडिशा, भुवनेश्वर



14 जुलाई भारत के अंतरिक्ष अभियान के लिए यह बड़ा दिन था। इस दिन इसरो ने चंद्रयान-3 मिशन लॉन्च किया था। मिशन की सफलता ने पूरा खेल पलट दिया था। यह भारत को तेजी से बढ़ने के लिए बड़ी खुराक देने की क्षमता रखता है। इससे स्पेस सेक्टर में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) इसके लिए तैयार था। इस मिशन की सफलता से बहुत कुछ जुड़ा है। यह विकसित भारत बनने की दिशा में एक बड़ा कदम था। इस मिशन से कई तरह के मौके खुलेंगे। इन अवसरों से भारतीय अर्थव्यवस्था को दौड़ने के लिए बड़ी खुराक मिलेगी। चांद पर खोज से जुड़ा यह मिशन धरती पर जियो पॉलिटिक्स के लिहाज से भी बहुत खास है। इसकी सफलता ने भारत को अमेरिका, रूस और चीन के साथ दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों में खड़ा कर दिया है।

अभी तक सिर्फ तीन देशों को चांद पर अंतरिक्ष यानों को उतारने में सफलता मिली थी। ये देश हैं अमेरिका, रूस और चीन। चंद्रयान-3 मिशन की सफलता से भारत भी इस क्लब में शामिल हो गया है। इस मिशन के साथ बड़ा आर्थिक पहलू भी जुड़ा हुआ है। आंकड़ों के अनुसार, भारत की स्पेस इकोनॉमी 2020 तक 9.6 अरब डॉलर की थी। 2025 तक इसके बढ़कर 13

अरब डॉलर हो जाने के आसार हैं। आज भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र निजी कंपनियों के लिए भी खुला है। देश में 140 से ज्यादा स्पेस-टेक स्टार्टअप हैं। इनमें स्कायरूट, सैटशोर, ध्रुव स्पेस और बेलेट्रिक्स जैसी कंपनियां शामिल हैं। ये ऐसी टेक्नोलॉजी बनाने पर काम कर रही हैं जिनका रोजमर्रा के जीवन में इस्तेमाल है। ये कंपनियां सैटेलाइट आधारित फोन सिग्नल, ब्रॉडबैंड, ओटीटी से लेकर 5 जी और सोलर फार्म तक में स्पेस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने के मौके तलाश रही हैं। भारत के स्पेस सेक्टर में पैसा लगाने के लिए निवेशक लालायित हैं। स्पेस इंडस्ट्री में सरकार निजी सेक्टर की ज्यादा सहभागिता चाहती है। इसी मंशा से उसने भारतीय अन्तरिक्ष नीति 2023 को मंजूरी दी है। यह निजी सेक्टर के लिए भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में निवेश की संभावनाओं को बढ़ाएगी।

जहाँ तक चंद्रयान-3 मिशन की बात है तो इसकी सफल लैंडिंग भारत के लिए निर्णायक पहल है। यह न केवल देश को अंतरिक्ष खोज की दौड़ में बढ़त दिलाएगा। बल्कि, अर्थव्यवस्था में भी योगदान देगा। रोजगार के मौके पैदा करने से लेकर निजी निवेश में बढ़ोतरी और यहाँ तक कि तकनीकी प्रगति तक में चंद्रयान -3 मिशन भारतीय अर्थव्यवस्था के अलग-अलग पहलुओं

को बढ़ावा दे सकता है।

चंद्रयान-3 के सफल लॉन्च से निवेशकों का भरोसा बढ़ेगा। वे भारत की स्पेस टेक्नोलॉजी में ज्यादा निवेश के लिए आकर्षित होंगे। इससे निजी निवेश को बढ़ावा मिलेगा। गूगल जैसी कंपनियां पहले से ही भारत के स्पेस-टेक स्टार्टअप में निवेश कर रही हैं। इस बात में आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि अगर चंद्रयान -3 मिशन की सफलता के बाद विदेशी कंपनियों की ओर से निवेश बढ़ जाए। इसके अलावा निजी क्षेत्र की बढ़ती भागीदारी से नए स्टार्टअप, व्यवसाय और नौकरी के अवसर सामने आ सकते हैं। इससे आर्थिक विकास और नवोन्मेष को बढ़ावा मिलेगा।

भारत के स्पेस-टेक इकोसिस्टम में तेजी से विकास हुआ है। इसने कोरोना की महामारी के बाद से पिछले कुछ वर्षों में हजारों नौकरियां पैदा की हैं। लेकिन, पहले स्पेस इकोनॉमी पर ध्यान न देने के कारण संघर्ष करना पड़ा है। आज, इस क्षेत्र में ब्लू-कॉलर और व्हाइट-कॉलर दोनों तरह की लाखों नौकरियां पैदा करने की क्षमता है।



नदी मालिनी और रथयात्रा

श्री कालिप्रसाद मिश्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



नौ दिवसीय रथ यात्रा उत्सव के दौरान दिव्य भाई-बहनों की एक झलक पाने के लिए हजारों भक्त गुंडीचा मंदिर के सामने शारदा बाली में आते हैं लेकिन उनमें से कई लोगों को इस जगह से जुड़ी कहानियों के बारे में पता नहीं है।

हजारों साल पहले, भगवान जगन्नाथ के मुख्य मंदिर और गुंडीचा मंदिर के बीच एक नदी बहती थी जिसे भार्गवी की सहायक नदी मालिनी कहा जाता है। इसलिए त्योहार के छह रथों का प्रयोग किया गया था, प्रत्येक नदी के किनारे तीन, फिर उन्हें एक अस्थाई पुल के माध्यम से दूसरी तरफ ले जाया गया और रथों के दूसरे सेट पर चढ़ाया गया। रथयात्रा के दिन शानदार रथ नदी किनारे तक चले। कुछ ग्रंथों में लिखा है कि सात रथ हुआ करते थे, एक और चार और दूसरी और तीन। अतिरिक्त रथ संगीतज्ञों को मालिनी नदी तक ले जाता था।

तत्कालीन पुरी राजा गजपति नरसिंह देव की पत्नी शारदा देवी ने भगवान जगन्नाथ को सपने में बिना किसी रोक-टोक के एक ही यात्रा करने का आदेश दिया था। नतीजतन, उसने मालिनी नदी का मुंह बंद कर दिया था। और नदी रेत से भर गई थी। इस मुंह बंद को बांकी मुहाना कहा जाता है और तब से इस स्थान को शारदा सेतु या शारदा बाली के नाम से जाना जाता है। शारदा बाली जो उन लोगों की वास्तविक जीवन की घटनाओं को बताती है जिन्होंने भगवान की चमत्कारी शक्ति का अनुभव किया है। उस समय दोनों मंदिरों के बीच त्रिमूर्ति की यात्रा चार से छह दिनों तक चलती थी।

तीन रथ, हर साल नवनिर्मित होते हैं और निर्धारित

अनूठी योजना के अनुसार सजाए जाते हैं और सदियों से ग्रेंड एवेन्यू, बड़े डंडे पर खड़े होते हैं। काले, पीले और नीले रंग के साथ संयुक्त लाल कपड़े की धारियों से बनी चमत्कारिक छतरियां, विशाल रथ अपने पूर्वी प्रवेश द्वार के करीब राजसी मंदिर के ठीक सामने चौड़ी गली में पंक्तिबद्ध है। जिसे सिंह द्वार या शेर के द्वार के रूप में भी जाना जाता है।

बलभद्र, सुभद्रा और जगन्नाथ के तीन रथों का निर्माण हर साल विशिष्ट पेड़ों की लकड़ी जैसे फस्सी, धौसा आदि से किया जाता है, जो परंपरागत रूप से दशपल्ला के पूर्व-रियासत राज्य से लाए जाते हैं, बढई की एक विशेषज्ञ टीम द्वारा जिनके पास वंशानुगत अधिकार और विशेषाधिकार हैं वही लॉग को पारंपरिक रूप से महानदी में राफ्ट के रूप में स्थापित किया जाता है।

भगवान बलभद्र के रथ को तालध्वज के नाम से जाना जाता है। भगवान बलभद्र के रथ की पहचान करने का सबसे आसान तरीका रथ के आवरण के रंग से है। बलभद्र के रथ में हरे और लाल रंग की छतरी होती है और यह रथों में दूसरा सबसे बड़ा होता है। रथ में 4 घोड़े होते हैं और घोड़ों का रंग काला होता है। रथ की ऊंचाई 44 फीट है और इसमें 14 पहिये हैं। रथ के संगरक्षक देवता वासुदेव हैं और सारथी को मातली के नाम से जाना जाता है। रथ के द्वारपाल नंदा और सुनंदा हैं। रथ पर लगे ध्वज को यूनानी कहा जाता है। रथ को खींचने के लिए जिस रस्सी का प्रयोग किया जाता है उसे बासुकी के नाम से जाना जाता है। बलभद्र के साथ रथ में गणेश, कार्तिकेय, सर्वमंगला, प्रलंबरी, हलायुध, मृत्युंजय, नटम्वर, मुकेश्वर, और शेषदेव की मूर्तियाँ भी हैं। रथ के मुख

सुरभि 2023

को केतु भद्र के नाम से जाना जाता है और शस्त्र हल और मूसल हैं।

देवी सुभद्रा के रथ को देवदलन के नाम से जाना जाता है। इसे दर्पदलन और पद्मध्वज के नाम से भी जाना जाता है। देवी सुभद्रा के रथ की पहचान करने का सबसे आसान तरीका रथ के आवरण के रंग से है। देवी सुभद्रा के रथ में काले और लाल रंग की छतरी होती है। यह रथों में सबसे छोटा भी होता है। रथ में 4 घोड़े होते हैं और घोड़ों का रंग लाल होता है। रथ की ऊंचाई 43 फीट है और इसमें 12 पहिये हैं। रथ के संगरक्षक देवता जयदुर्गा हैं और सारथी को अर्जुन के नाम से जाना जाता है। रथ पर लगी ध्वजा को नादंबिका के नाम से जाना जाता है। रथ को खींचने के लिए जिस रस्सी का प्रयोग किया जाता है उसे स्वर्णचूड़ा के नाम से जाना जाता है। रथ में सुभद्रा के साथ-साथ चंडी, चामुंडा, उग्रतारा, वनदुर्गा, शुलिदुर्गा, वरही, श्यामा काली, मंगला, और विमला की मूर्तियाँ भी हैं। रथ के मुख को भक्ति सुमेध के नाम से जाना जाता है और हथियार पद्म और कलहर है।

भगवान जगन्नाथ के रथ को नंदीघोष के नाम से जाना जाता है। इसे गरुडध्वज और कपिध्वज के नाम से भी जाना जाता है। भगवान जगन्नाथ के रथ की पहचान करने का सबसे आसान तरीका रथ के आवरण के रंग से है।

जगन्नाथ के रथ में पीले और लाल रंग की छतरी होती है और यह रथों में सबसे बड़ा भी होता है। रथ में 4 घोड़े होते हैं और घोड़ों का रंग सफेद होता है। रथ की ऊंचाई 45 फीट है और इसमें 16 पहिये हैं। यह सुदर्शन चक्र प्रतीक को भी प्रमुखता से दर्शाता है। रथ के संगरक्षक देवता गरुड हैं और सारथी को दारुका के नाम से जाना जाता है। रथ पर लगी ध्वजा को त्रैलोक्यमोहिनी के नाम से जाना जाता है। रथ को खींचने के लिए जिस रस्सी का प्रयोग किया जाता है उसे शंखचूड़ के नाम से जाना जाता है। जगन्नाथ के साथ रथ में वराह, गोवर्धन, कृष्ण, नृसिंह, राम, नारायण, त्रिविक्रम, हनुमान और रुद्र की मूर्तियाँ भी हैं। रथ के मुख को नंदी मुख के नाम से जाना जाता है और हथियार शंख और चक्र हैं।

प्रत्येक अर्थ के चारों और नौ पार्श्व देवता हैं। रथों के किनारों पर विभिन्न देवताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली चित्रित लकड़ी की छवियाँ हैं। प्रत्येक रथ में चार घोड़े जुड़े होते हैं। ये अलग अलग रंगों के होते हैं। बलभद्र के लिए सफेद, जगन्नाथ के लिए गहरे और सुभद्रा के लिए लाल। प्रत्येक रथ में सारथी नामक एक सारथी होता है। जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के रथों से जुड़े तीन रथ क्रमशः मातली दारुका और अर्जुन हैं।



सुरभि
2023

कार्यालय की नई कैटीन

शैलेंद्र कुमार
हिंदी अधिकारी
कार्यालय-महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
ओड़िशा, भुवनेश्वर
मो.न.- 9471111919



कैटीन आयी
कैटीन आयी
कार्यालय में नई कैटीन आई।।

भात, दालमा, साग और चटनी
कैसे सब के मन को भायी
कैटीन आयी
कैटीन आयी

कार्यालय में नई कैटीन आयी ।।

छोड़ दिया अब घर का खाना
बीबी की भी हुई रुसवाई
कैटीन आयी
कैटीन आयी
कार्यालय में नई कैटीन आयी ।।

ऊंच नीच का भेद मिटाई,
अधिकारी-कर्मचारी सब मिलकर
खायी।

बड़े रसोईए आए हैं,
स्वादिष्ट व्यंजन पकाए हैं।
देखो कैसी भीड़ लगी है,
बैठने की भी जगह नहीं है।।

कैटीन आयी
कैटीन आयी
कार्यालय में नई कैटीन आई।।

फूले नहीं समा रहे कंवारे
महालेखाकार ने भाग्य संवारे
विवाह पर उनके हो रहा अब डाउट
विवाह-विवाह जो करते थे शाउट
पकाने की पेचिदगी से दूर
शादी को कर सकते हैं आउट।।

मुझको भी ये खबर हुई है,
बड़ी सीक्रेट की न्यूज मिली है
घर से भोजन लाने वाले भी
कैटीन में ही खाए हैं।
देखो सबके चेहरे को अब
कैसे सब शर्माए हैं।

कैटीन आयी
कैटीन आयी
कार्यालय में नई कैटीन आई।।

भात, दालमा, साग और चटनी
कैसे सब के मन को भायी
कैटीन आयी
कैटीन आयी
कार्यालय में नई कैटीन आयी ।।



सुरभि
2023

माँ

श्री प्रशांत सिंह भदौरिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



नहीं है कुछ कहने की जरूरत,
माँ होती ममता की मूरत ।
नहीं है केवल शब्द कोई माँ,
प्यार का सागर त्याग की प्रतिमा ॥

कुर्बान किया जीवन का हर पल,
भर दे वो खुशियों से आंचल ।
जीवन में जिससे है पग पग,
आगे कदम बढ़ाना सीखा ॥

दुखों के अंधेरे में जब जब,
पीछे मुड़कर मैंने देखा ।
वो तू थी सबसे पहले माँ,
पाया जिसको करते रोशन,
चाहत की किरण, उम्मीदों का सवेरा ॥

एक ही ख्वाहिश रब से,
नहीं है जन्नत की चाहत ।
रह जाऊं माँ के चरणों में ,
हर जन्म में तुझको ही पाऊं ॥



एक रिश्ता प्रकृति और पर्यावरण के साथ

श्रीमती मीनाक्षी आचार्य

पर्यवेक्षक

कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



किसी भी वस्तु का व्यावसायिक महत्व तो हम समझते हैं पर उसके भावनात्मक पहलु की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता है। पर इस बात को अगर हम विपरीत दिशा से सोचे तो अगर हमें यह अहसास हो कि हमारे जीवनकाल में सकारात्मक भावनाओं के अनुसार काम करने से आर्थिक फायदा भी हो सकता है, तो हम जरूर इस बात को गंभीरता से सोचना शुरू करेंगे।

भारतीय आयुर्वेद और योगशास्त्र के अनुसार इस सृष्टि की संरचना पंच महाभूतों (Five Elements) से हुई है और इससे मनुष्य शरीर भी बना है। इनके नाम हैं पृथ्वी, जल, तेज/ अग्नि, वायु और आकाश। इन पंच महाभूतों में समन्वय करके अनंत काल से प्रकृति ने इस पृथ्वी पर जीवनचक्र की संरचना की है। जिसके अंतिम पर्याय में मनुष्य जाति की सृष्टि हुई है। आदिकाल से मनुष्य प्रकृति के साथ तालमेल बैठकर अपना जीवन यापन कर रहा था। पर विगत दो सौ सालों से, जब से पाश्चात्य देशों में औद्योगिक क्रांति आई है तब से कारखानों से निकले हुए दूषित पदार्थों से पर्यावरण प्रदूषित होना शुरू हो गया था और आज इस पर्यावरण की समस्या ने वैश्विक तापमान का उग्ररूप लेकर पूरी पृथ्वी को विध्वंस की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

औद्योगिक विकास के नाम पर आदमी ने मात्राधिक रूप में प्रकृति का शोषण किया है। इसके कारण आज जंगल विलुप्त होते जा रहे हैं। भूमिगत जलस्तर तेजी से गिरता जा रहा है। महानगरों में वायुप्रदूषण से आज आदमी की जान पर बन आई है। हाल ही में मौसमी बारिश की शुरुआत में ही हिमाचल प्रदेश की सारी नदियों में आचानक से आई भीषण

बाढ़ भी बिगड़ते पर्यावरण का ही नतीजा है।

पर्यावरण के लिए हमारे कर्तव्य और जिम्मेदारी के बारे में याद दिलाने के लिए और पर्यावरण प्रदूषण के भयावहता और प्रतिकार के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने सन् 1974 से हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाना तय किया था। इस साल इसके प्रसंग का विषय है प्लास्टिक प्रदूषण का समाधान।

पूरे विश्व में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण में भी तेजी से अभिवृद्धि के कारण प्लास्टिक का कूड़ा-कचरा पहाड़ों का आकार ले चुका है, यह वस्तु जैवविघटित (Biodegradable) नहीं होने के कारण पर्यावरण के लिए ढेर सारी विपत्तियों का कारण बना हुआ है।

प्लास्टिक का दैनिक जीवन में ज्यादा उपयोग के कारण आज हमारा पर्यावरण अत्यंत संकटजनक स्थिति का सामना कर रहा है। इस प्लास्टिक के दानव का दमन करने के लिए सुनियोजित कार्यप्रणाली के साथ-साथ जन-जागरूकता फैलाने की जरूरत है। प्लास्टिक सामग्री के पुनः उपयोग और पुनः चक्रण (Reuse & Recycle) के द्वारा इसकी कूड़ाकचरे की समस्या कम होने के साथ-साथ विभिन्न पर्यावरणीय समस्याएं भी घट जाएंगी।

प्रकृति और मानव एक दूसरे के प्रतिपूरक हैं। सारी सृष्टि में श्रेष्ठ और विवेकवान जीव होने के कारण मनुष्य को ही प्रदूषित पर्यावरण को पुनर्जीवित करने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर कदम उठाने होंगे। इसके लिए पहले हमें अपने घर से शुरुआत करके अपने गाँव, शहर, राज्य, देश और इस तरह समग्र विश्व को पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त करने के

सुरभि 2023

आंदोलन को तब तक जारी रखना होगा। जब तक कि सारी पृथ्वी प्रदूषण के जहर से मुक्त ना हो जाए, स्वच्छ पानी स्वच्छ हवा, उर्वर जमीन और निर्मल आकाश, ये सपना जब

साकार होकर मनुष्य जाति के साथ-साथ सभी जीव जंतुओं और पेड़ पौधों को मिलने लगे, तभी हम जान पाएंगे की पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त हो कर अनंत-जीवन से युक्त हो गया है।



सुरभि
2023

बिरजू की माँ

श्री धीरज कुमार सोनकर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



मुझे फिर से आज
बिरजू की माँ दिखी

वही लाल रेशों वाली
फैली आँखें
जो सूख गई थी
कितनी रात जागे ।

आँखों से टपकता
वही ममत्व
दर्द से चायछन्नी से छना
समान घनत्व ।

वही छरहरी
कुपोषित काया
मीलों तक रोज
चली हुई काया,
नटनी की तरह
बचपन से चली,
बीच बीच में थोड़ा खाया ।

बिरजू की माँ
कब से डटी थी
आज दिनभर वो
आधार की लाइन में खड़ी थी ।



सुरभि
2023

ख्वाहिश-ए-दिल

श्री सतीश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय-महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



ऐसी भी क्या अनहोनी जो होनी न थी
खुशियाँ मेरे दामन से खोनी न थी ।
खुश रहने की कोशिश में करता रहा
तेरे बगैर बस आहें भरता रहा ।
आगोश में खो जाने की जो जिद थी
उसे बस सपनों में ही पूरा करता रहा ।
ज़माने को भुलाकर उनके साथ सुकून की तलाश थी
उन्हें देखे बगैर बुझती कहाँ प्यास थी ।

मैं तो बस उनके लिए ही जिन्दा था
मरता भी कैसे उनके दिल की वादियों का मैं परिंदा था ।
आसमानी बादलों में तेरा ही चेहरा दिखता था
प्यार के एहसासों में मैं यँ ही कुछ कुछ लिखता था ।

सपनों का वो घर उनके साथ बसाना था
जिंदगी भर उन्हें बस हँसाना था
उनके ख्वाब को कुछ यँ सजाना था
याद करें ये जमाना ! एक ऐसा भी दीवाना था ।
लफ़्ज़ों पर बस एक ही नाम था
जब भी मैखाने में छलकता जाम था
बस उनसे प्यार करना ही मेरा काम था
उसे जब भी मिलता दिल को मिलता आराम था ।
उनकी हर एक अदाओं का मैं कायल था
देखा था उन्हें जब से यह दिल घायल था ।
प्यार और इश्क की आजमाइश थी
उन्हें पाने की दिली ख्वाहिश थी ।
ना मिली मुझे मिली अब ये जीवन किस काम का
इंतजार था बस अपनी मौत की उस शाम का ।



मिथिला की गौरवमयी अतीत

श्री राजेश झा
 वरिष्ठ लेखापरीक्षक
 कार्यालय-महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
 ओडिशा, भुवनेश्वर



पग-पग पोखर, माँछ, मखान, मधुर बोल मुस्की मुख पान।
विद्या, वैभव, शांति प्रतीक, सरस नगर मिथिला थीं॥

बृहद विष्णुपुराण के मिथिला खण्ड में मिथिला (तीरमुक्ति) की सीमाओं का निम्नलिखित रूप में वर्णन किया गया है-

गंगाहिमवतोर्मध्ये नदी पंचदशांतरे।
 तैरभुक्तिरिति ख्यातो देशः परमपावनः॥
 कौशिकीतु समारभ्य गण्डकीमाधिगम्य वै।
 योजनानि चतुर्विंशद् व्यायामः परिकीर्तितः॥
 गंगाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम्।
 विस्तारः षोडश प्रोक्ता देशस्य कुलनन्दन॥
 मिथिला नाम नगरी समस्ते लोकविश्रुता।
 पंचभिः कारणैः पुण्या विख्याता जगतीत्रये॥

उपर्युक्त उद्धरण के अनुसार मिथिला जनपद की लंबाई 24 योजन अर्थात् 192 मील तथा चौड़ाई 16 योजन अर्थात् 128 मील थी और उसके उत्तर में पर्वतराज हिमवान का आरण्य प्रदेश। दक्षिण में हिमवत प्रभवा पुण्यसलिला गंगा नदी, पूर्व में परम चंचला कोशी नदी की वेगवती धारा और पश्चिम में गण्डकी नदी है। गण्डकी नदी को नारायणी एवं सदानीरा भी कहा जाता है जो हाजीपुर के निकट बिहार राज्य की राजधानी पटना (प्राचीन नाम पाटलीपुत्र) के सामने गंगा से मिलती है।

मिथिला प्राचीन भारत में एक राज्य था जो वर्तमान में एक सांस्कृतिक क्षेत्र है जिसमें बिहार के तिरहुत, दरभंगा,

मुंगेर, कोसी जोन, सुपौल, पुर्णिया और भागलपुर प्रमंडल तथा झारखंड के संथाल परगना प्रमंडल के साथ-साथ नेपाल के तराई क्षेत्र के कुछ भाग भी शामिल हैं। इस क्षेत्र की प्रमुख भाषा मैथिली है जो सुनने में मीठी एवं कर्णप्रिय भाषा है। वर्ष 2003 में मैथिली भाषा को भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित किया गया जिसकी घोषणा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने बिहार के सुपौल जिले के निर्मली से की थी। सन् 2007 में नेपाल के अंतरिम संविधान में इसे एक क्षेत्रीय भाषा के रूप में स्थान दिया गया है। झारखंड राज्य में इसे द्वितीय राज्य भाषा का दर्जा प्राप्त है। बांग्ला, असमिया और ओडिया के साथ-साथ इसकी उत्पत्ति मगधी प्राकृत से हुई है। कुछ अंशों में ये बांग्ला और कुछ अंशों में हिंदी से मिलती-जुलती है।

हिंदू धार्मिक ग्रंथों में सबसे पहले इसका (मिथिला) संकेत शतपथ ब्राह्मण में तथा स्पष्ट उल्लेख वाल्मीकीय रामायण में मिलता है। मिथिला का उल्लेख महाभारत, रामायण, पुराण तथा जैन एवं बौद्ध ग्रंथों में हुआ है।

एक समय की बात है, कच्छ के रण से एक गुरु और शिष्य गुरु गौतम रहगण तथा शिष्य माधव विदेह, दोनों एक ऐसी जगह की तलाश में घूम रहे थे, जो काफी उर्वरा और दर्शनीय हो। यात्रा के दौरान गुरु और शिष्य की जोड़ी सर्वप्रथम। इलाहाबाद और उसके बाद बनारस के निकट सदानीरा नदी (गंडक) के उस पार पहुँची। कहा जाता है कि बनारस के लोगों ने उन्हें नदी के उस पार जाने से बहुत रोका परंतु वे नहीं रुके।

तमाम बाधाओं से उलझती गुरु शिष्य की जोड़ी नदी पार करके वहां पहुँच गयी। अब उस धरती पर समाज का निर्माण करने के लिए गौतम रहगण ने तीन वेदज्ञाताओं को बुलाया और कई दिनों तक पूजा-पाठ कराई। तीन ऋषियों द्वारा की गई पूजा-अराधना से इस स्थल का नाम तिरभुक्ति रखा गया जिसका अपभ्रंश शब्द तिरहुत है। यहाँ से माधव विदेह का काल शुरू हुआ, जिनके नाम पर इस क्षेत्र को विदेह कहा गया। उसके बाद राजा निमि फिर राजा मिथि: निमि के मृत शरीर से अवतरित हुए, इसलिए उनका नाम मिथि (जनक) पड़ा। राजा मिथि का कार्यकाल बहुत अच्छा रहा जिससे प्रसन्न होकर प्रजा ने इसे हमेशा स्मरण रखने के लिए इस क्षेत्र का नाम विदेह से बदलकर मिथिला रख दिया।

मिथिला पान, मखाने और माछ (मछली) के लिए काफी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यहाँ जैसा पान, मखान स्वर्ग में भी नहीं मिलता है। भारत के किसी भी कोने में मिथिला पान जैसा स्वाद नहीं मिलता है। देश में 90% मखाने का उत्पादन बिहार में ही होता है जिसमें मिथिला 70% मखाने का उत्पादन करती है। सबसे खुशी की बात ये है कि पिछले साल 2022 में मिथिला मखाना को जीआई टैग प्रदान किया गया है। मखाने में कैल्शियम, मैग्निशियम, आयरन और फॉस्फोरस जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों के साथ-साथ प्रोटीन और फाइबर होता है। यहाँ मारा, रेहु और नेनी समेत कई मछलियां बृहद स्तर पर पायी जाती हैं जो लोगों के जीविकोपार्जन का सबसे बड़ा केंद्र बनती हैं।

मिथिला संस्कारों की भूमि है। लोक-व्यवहारों की भूमि है। विचारों की भूमि है। अवतारों की भूमि है। दर्शन की भूमि है। सृजन की भूमि है। यह न सिर्फ मधुर भाषा की भूमि है, बल्कि इस भाषा के संस्कार गीतों की भूमि भी है। मिथिला

महाकवि विद्यापति के काव्य की भूमि है, तो दूसरी तरफ डॉ. सुभद्र झा, डॉ. रामावतार यादव जैसे भाषा विदों की भूमि है। यह पंडितों, किसानों, कारीगरों और मजदूरों की भूमि है। यह विदेह राजा जनक की पुत्री माता सीता की पावन जन्मभूमि है। राजा जनक जिन्हें विदेह (राजा निमि के मृत शरीर से उत्पन्न होने के कारण) कहा जाता है, की पुत्री होने के कारण माँ सीता को वैदेही कहा जाता है। मिथिला में जन्म लेने के कारण इन्हें मैथिलि और राजा जनक द्वारा चलाये गये हल के अग्र भाग, जिसे संस्कृत में सीत गहा जाता है, से जन्म होने के कारण इन्हें सीता कहा जाता है। राजा जनक की पुत्री होने के कारण इन्हें जानकी और राजा जनक की अत्याधिक प्यारी और दुलारी होने के कारण इन्हें जनकदुलारी और जनकनंदनी भी कहा जाता है। प्रभु श्री राम का ससुराल है ये पावन मिथिला।

कोसी की हर साल आनेवाली बाढ़ हो या गर्मियों में लगनेवाली आग, बरसात में उफनती नदियों का प्रकोप हो या माघ-पूस की कड़कड़ाती ठंड, सब झेलती रही है मिथिला।

यहाँ प्रबुद्ध लोगों की कमी कभी नहीं रही है, जो अपने वाक्चातुर्य से किसी की भी छद्म बोद्धिकता का दर्प चूर-चूर कर सकते थे। चाहे वह गोनू झा की दंत कथाएँ हो या मंडन मिश्र और उनकी पत्नी भारती का आदि शंकराचार्य के साथ हुआ कथित शास्त्रार्थ, जिसमें शंकराचार्य को हार माननी पड़ी थी।

कहते हैं कि महिषी, जो मंडन मिश्र का गाँव था, वहाँ तो तोते भी संस्कृत के श्लोक बोलते थे। महाकवि कालिदास, संत-लक्ष्मीनाथ गोसाई, उदयनाचार्य की भूमि पर भाषा, साहित्य, अध्यात्म और दर्शन का ही बोलबाला रहा है। यह आदिकवि विद्यापति जिनके भक्ति से प्रसन्न होकर कालों के काल महाकाल भगवान शिव उनके नौकर बनकर उगना के रूप में आये।

सुरभि 2023

वहाँ के खान-पान और पहनावे की विशेषता तो जगत प्रसिद्ध है। पान-मखान, माछ-दही, पाग-दोपट्टा, जनेऊ-सुपारी ऐसे कई द्वय हैं जो आज भी प्रचलित हैं। मिथिला के भोज-भात की तैयारी और उसके खान-पान के क्या कहने। महादेव के भक्त मैथिल भांग को प्रसाद और भोग समझकर ग्रहण करते हैं। यहाँ शैव, शाक्त और वैष्णव तीनों धार्मिक परंपराओं को माननेवाले लोग हैं। यहाँ वैदिक रीति-रिवाज का आज भी अनुष्ठानों और यज्ञों में पालन किया जाता है।

यहाँ बारहमासा और संस्कार गीतों से आज भी आँगनों में उपनयन और विवाह की विधियों की शुरुआत होती है। झिझिया, डोमकछ, जट-जट्टीन और झरनी जैसे लोक नृत्यों से न सिर्फ ग्राम देवताओं को प्रसन्न किया जाता है, बल्कि यह सामाजिक सौहार्द बनाए रखने में भी मदद करता है।

मधुबनी चित्रकला जिसे लिखिया या मिथिला पेंटिंग भी कहा जाता है, अब एक विश्व प्रसिद्ध आर्ट फॉर्म है। लेकिन दीना-भद्री, दुलरा दयाल, राजा सलहेस की कहानियां विलुप्तप्राय हो गयी हैं जिसे सहेज कर रखने की जरूरत है।



भारत की अध्यक्षता में G-20

तपेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
महालेखाकर (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
ओड़िशा, भुवनेश्वर



G20 या ग्रुप ऑफ ट्वेंटी, दुनिया की 20 प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक अंतर-सरकारी मंच है जिसमें 19 देश - अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्किये, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं। यह सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। G20 के सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के लगभग 85 प्रतिशत, वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत से अधिक और विश्व जनसंख्या के लगभग दो-तिहाई का प्रतिनिधित्व करते हैं।

G20 की स्थापना 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक बैठक के रूप में की गई थी। 2008 के वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट के मद्देनजर G20 को शिखर सम्मेलन के रूप में स्थापित किया गया तथा 2009 में इसे "अंतराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग हेतु प्रमुख मंच" के रूप में नामित किया गया।

आरंभ में G20 व्यापक आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित था, परंतु बाद में इसके एजेंडे में विस्तार करते हुए इसमें व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण और भ्रष्टाचार-विरोध शामिल किया गया। इसका शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष एक क्रमिक अध्यक्षता में आयोजित किया जाता है। इसके एजेंडे तथा कार्यों का समन्वय G20

नेताओं के निजी प्रतिनिधियों (जिन्हें शेरपा के रूप में जाना जाता है) द्वारा वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के साथ किया जाता है।

G20 का कोई स्थायी सचिवालय नहीं है। इसकी अध्यक्षता ट्रोइका द्वारा समर्थित है जिसमें पिछला, वर्तमान और आगामी अध्यक्ष शामिल होते हैं। G20 अध्यक्षता के तहत एक वर्ष के लिए G20 एजेंडा का संचालन किया जाता है और शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। G20 में दो समानांतर ट्रैक होते हैं: वित्त ट्रैक और शेरपा ट्रैक। वित्त मंत्री और सेंट्रल बैंक के गवर्नर वित्त ट्रैक का नेतृत्व करते हैं जबकि शेरपा ट्रैक का नेतृत्व शेरपा करते हैं। दोनों समानांतर ट्रैक के भीतर विषयगत रूप से उन्मुख कार्य समूह (thematically oriented working groups) बनाए गए हैं जिनमें सदस्यों के संबंधित मंत्रालयों के साथ-साथ आमंत्रित/ अतिथि देशों और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। वित्त ट्रैक मुख्य रूप से वित्त मंत्रालय के नेतृत्व में होता है। ये कार्य समूह प्रत्येक अध्यक्षता के पूरे कार्यकाल में नियमित बैठकें करते हैं। शेरपा, वर्ष के दौरान हुई वार्ता का पर्यवेक्षण करते हैं, शिखर सम्मेलन के लिए एजेंडा आइटम पर चर्चा करते हैं और G20 के मूल कार्य का समन्वय करते हैं। इसके अलावा, कई ऐसे सम्पर्क समूह (Engagement Groups) हैं जो G20 देशों के नागरिक समाजों, सांसदों, विचार मंचों (think tanks), महिलाओं, युवाओं, श्रमिकों, व्यवसायों और शोधकर्ताओं को संबोधित करते हैं।

1 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक भारत

G20 की अध्यक्षता करेगा। भारत की अध्यक्षता के दौरान, ट्रोइका में क्रमशः इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील शामिल हैं। इस दौरान करीब 200 बैठकें हुईं। 18वां G 20 राष्ट्राध्यक्षों/ शासनाध्यक्षों का शिखर सम्मेलन 9-10 सितंबर 2023 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया।



वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 08 नवंबर 2022 को भारत की G20 की अध्यक्षता के लिए लोगो, थीम और वेबसाइट (<http://www.g20.in>) का अनावरण किया।

G20 का लोगो (logo) भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों - केसरिया, सफेद और हरे एवं नीले रंग से प्रेरित है। इसमें भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल को पृथ्वी ग्रह के साथ प्रस्तुत किया गया है जो चुनौतियों के बीच विकास (growth amid challenges) को दर्शाता है। पृथ्वी, जीवन के प्रति भारत की धरती के अनुकूल उस दृष्टिकोण को दर्शाती है, जो प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य को प्रतिबिम्बित करता है।

भारत की G20 की अध्यक्षता का विषय/थीम - "वसुधैव कुटुम्बकम् "या" एक पृथ्वी • एक परिवार • एक भविष्य" - महा उपनिषद के प्राचीन संस्कृत पाठ से लिया गया है। यह विषय सभी प्रकार के जीवन मूल्यों - मानव, पशु, पौधे और सूक्ष्मजीव - और पृथ्वी एवं व्यापक ब्रह्मांड में उनके परस्पर संबंधों की पुष्टि करता है। यह विषय व्यक्तिगत जीवन शैली के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास के स्तर पर, संबंधित पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ और जिम्मेदार विकल्पों के साथ LiFE (Lifestyle for Environment) पर भी प्रकाश डालती है।

भारत की G20 की अध्यक्षता ग्रहण करने के उपलक्ष्य में

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित 100 स्मारकों को G20 के logo के साथ एक सप्ताह (1-7 दिसंबर 2022) के लिए रोशनी से जगमग किया गया।

G20 शिखर सम्मेलन में सदस्य देशों के अलावा कई अन्य अतिथि देशों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को आमंत्रित किया जाता है। भारत ने इस अध्यक्षता के दौरान बांग्लादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात देशों को आमंत्रित किया है। साथ ही, नियमित अंतर्राष्ट्रीय संगठन UNO, IMF, WB, WHO, WTO, ILO, FSB और OECD और क्षेत्रीय संगठनों AU, AUDA-NEPAD और ASEAN के अतिरिक्त भारत ने ISA, CDRI और ADB को भी अतिथि संगठन के रूप में आमंत्रित किया है। भारत की G20 की अध्यक्षता की कुछ प्राथमिकताएं इस प्रकार हैं:

- हरित विकास, जलवायु वित्त और लाइफ (LiFE)
- त्वरित, समावेशी और लचीला विकास
- एसडीजी की तेज प्रगति
- तकनीकी बदलाव और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर
- 21वीं सदी के लिए बहुपक्षीय संस्थान
- महिलाओं के नेतृत्व में विकास

एक ऐसे समय में जब दुनिया कई भू-राजनीतिक और आर्थिक संकटों का सामना कर रही है साथ ही रूस-यूक्रेन युद्ध तथा यूरोपीय संघ और रूस के बीच गतिरोध के कारण कई देशों में मुद्रास्फीति और मंदी के रुझान भी देखने को मिल रही है, G20 की अध्यक्षता ने वैश्विक मामलों में नई दिल्ली की अग्रणी भूमिका को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया है। (Source: G20.org & Newspapers)

सुरभि
2023

पगली की कहानी

श्री नवीन चंद्र चौधरी
लेखापरीक्षक
कार्यालय-केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा
ओड़िशा, भुवनेश्वर



मुझे याद आ रही है, एक पगली की कहानी,
चेहरे पर गुस्सा और आँखों का पानी,
लडखड़ाते होठों से उसकी जुवानी,
एक छोटी सी चिड़िया और मोर की कहानी,
वो सावन का मौसम और बादल का गरजना,
बारिस की धुन पर वो मोर का थिरकना,
जिसकी हुई चिड़िया दिवानी।
पिंजड़ा तोड़, गई वो चहकने,
सब कुछ छोड़ गई वो भटकने,
बागों की कलियों से खुशबू चहकने।
बादल के पीछे दिखता था जमाना,
कितना हसी था, वो सपना सुहाना।
फिर घटा एक ऐसी छाई,
मोर को अपने घर की याद आई।

हर एक वादे को तोड़ गया वो,
चिड़िया को सदा के लिए छोड़ गया वो।
चिड़िया के सामने अंधियारी है छाई.....
सोचा नहीं था, होगा ऐसा मोर हरजाई।
रोती-विलखती रही वो अकेली,
मोर को जरा सी दया भी नहीं आई।
चूर हुए सारे सपने सुहाने,
बहुत याद आए वो गुजरे जमाने।
मजबूर होकर घर को गयी वो,
फिर पिंजड़े में आकर डर सी गयी वो।
अब दिखते नहीं कोई अपने-बेगाने।
ऐसे थे चिड़िया के किस्से पुराने।
आँख से जब पुरबाई टकराई,
पगली मुझे बहुत याद आई।
वो चेहरे पर गुस्सा और आँखों में पानी,
ऐसी थी एक पगली की कहानी।



बदलते समय के साथ जीवन की परिभाषा

श्री भूदेव प्रकाश,
वरिष्ठ लेपरीक्षक,
कार्यालय-केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा
ओड़िशा, भुवनेश्वर



समय बदलता है, पद बदलता है, परिस्थितियाँ बदलती हैं और साथ में जीवन जीने के तौर-तरीके भी बदलते हैं और इन सभी बदलावों के अनुरूप खुद को ढालना, इसी का नाम तो जिंदगी है क्योंकि आप बदलो या न बदलो लेकिन परिवर्तन संसार का नियम है जो होकर रहेगा। ये परिवर्तन आपको खुशी भी देंगे और दुःख भी, इस बदलाव में आपका बहुत कुछ पीछे छूट जाएगा और कुछ नया भी प्राप्त होगा। लेकिन इसका मतलब ये बिल्कुल नहीं है कि नया प्राप्त करने के लालच में आप उस हर पुरानी चीज को त्याग दें, जो पहले आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी।

रहीम दास जी ने ठीक ही कहा है-

"रहिमन देख बड़ेन को, छोटे न दीजे त्याग।

जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवार।"

आज संसार में एक दौड़ शुरू हो गयी है, एक-दूसरे से आगे निकलने की, कुछ कर दिखाने की, कुछ बड़ा हासिल करने की और इस रेस में शामिल लोग असल में अपनी जिन्दगी जीना भूलते जा रहे हैं। जीवन की परिभाषा केवल प्राप्त या हासिल कर लेना ही नहीं है, हो सकता है कि कुछ हासिल करने में अपना जीवन लगा दो और जब वो आपको मिले तो उसकी आपके जीवन में कोई भूमिका ही न रहे इसलिए कहते हैं-

"सारी उम्र गुजार दी, खवाबों का स्वेटर बुनते-बुनते।

जब बुनकर तैयार हुआ तो, मौसम बदल चुका था।"

और आज हम बात किसी व्यक्ति विशेष या जाति विशेष पर नहीं वल्कि हर उस इन्सान के जीवन के बारे में करेंगे, जो आज की आधुनिक दुनिया में खुद को ढालने के लिए जीवन के हर एक पग पर एक समझौता करता है।

एक क्षण के लिए सोचकर देखिये-

- क्या आज के बच्चे उसी बचपन को जी रहे हैं, जो पहले जिया करते थे?
- क्या आज बच्चे पहली बारिश में भीगने का वही आनंद लेते हैं, जो पहले लेते थे?
- क्या आप पहली बारिश के बाद मिट्टी की वो खुशबू महसूस कर पाते हैं, जो पहले करते थे?
- क्या आज माँ-बाप बच्चों को उतना समय दे पाते हैं, जो पहले दिया करते थे?
- क्या आज संतान अपने माँ-बाप को वही सम्मान देती है, जो पहले दिया करते थे?
- क्या आज परिवार में एक-दूसरे के प्रति उतना लगाव है, जितना पहले हुआ करता था?
- क्या आज रिश्तों में उतनी ही मिठास है, जो पहले हुआ करती थी?
- क्या आज हम किसी से उतना ही खुलकर मिलते हैं, जितना पहले मिला करते थे?
- क्या लोग किसी के प्रति उतनी ही सहयोग की भावना रखते हैं, जितनी पहले रखा करते थे?

- क्या आज लोग उतने ही तनावमुक्त रहते हैं, जितना पहले रहा करते थे?
- क्या बच्चे आज भी खुले आसमान में तारों को गिना करते हैं जैसे पहले किया करते थे?

ये सब बातें भले ही छोटी लगें लेकिन गम्भीर हैं और इस सब की यही वजह नजर आती है- बदलता माहौल और समय की कमी क्योंकि हम इंसान एक दौड़ में शामिल हैं कुछ हासिल करने के लिए एक-दूसरे से जीतने की, लेकिन इस रेस में धीरे-धीरे रिश्ते घटते जा रहे हैं। समय के साथ अपने आप को कुछ हद तक बदलना ठीक है लेकिन इसके साथ हमारी कुछ जिम्मेदारियाँ भी हैं जैसे बच्चों की अपने माँ-बाप के प्रति और माँ-बाप की अपने बच्चों के प्रति, जिनको हमें निभाना है। जिससे कि बाद में हमें किसी बात का अफसोस न हो क्योंकि समय कभी लौटकर वापस नहीं आता। इसीलिए कहते हैं-

"जिंदगी छोटी नहीं है, बस लोग जीना देर से शुरू करते हैं।

और जब जिंदगी समझ आती है, तो लौटने का वक्त हो जाता है।।"

आज हम टेक्नोलॉजी की दुनिया में प्रवेश कर चुके हैं और चकाचौंध से भरी ये डिजिटल दुनिया बाहर से बहुत रंगीन है। निःसंदेह इसने दूरियों को कम किया है लेकिन साथ में इसने हर इन्सान को अकेलापन व खालीपन भी दिया है



जिसको दूर करने के लिए वो इस पर निर्भर होता जा रहा है और यकीनन इसने हमारे जीवन को काफी बदल दिया है। हमारे मनोरंजन, घूमने-फिरने, खेलने-कूदने के सब तरीके बदल चुके हैं। हम अपने आराम की हर चीज खरीदना चाहते हैं जिसकी हमें जरूरत है और कुछ जरूरत हमें वास्तव में होती है लेकिन कुछ जरूरतों को हम पैदा करते हैं और फिर इन्हीं जरूरतों को पूरा करने के लिए जिन्दगी की दौड़ शुरू हो जाती है लेकिन जिन्दगी भर में जरूरतें पूरी नहीं होती। इस पर कबीर दास जी ने ठीक कहा है-

"माया मरी ना मन मरा, मर-मर गया शरीर।

आशा, तृष्णा ना मरी, कह गए दास कबीर।।"

लेकिन सीमित साधनों के साथ भी एक खुशहाल जिन्दगी को जिया जा सकता है। बस जरूरत है एक-दूसरे को समझने की, एक-दूसरे से जुड़े रहने की और साथ देने की। क्योंकि हो सकता है आप बहुत बड़ी मंजिल हासिल कर लें और पीछे मुड़कर देखने पर कोई अपना साथ ना हो और आप अकेले उस शिखर पर खड़े हो, तो वह मंजिल किसी काम की नहीं है। इसलिए जिन्दगी को खुशी से जीने के लिए अपनों का होना बहुत जरूरी है। इसलिए कहते हैं-

"ना आया अपनी मर्जी से था।

ना अपनी मर्जी से जायेगा।

थोड़ा इश्क इस जिन्दगी से भी करले दोस्त,
उम्र गुजरने के बाद में जीना बड़ा याद आयेगा।।"

सुरभि
2023

टूटते एहसास

श्रीमती परी सरकार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय-महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



हर रोज सोचती थी कि नौकरी से रिटायर हो जाऊं,
तो वक्त दूँगी अपनी जिंदगी में अपने परिवार को,
अपने पति को अपने जिगर के टुकड़े को,
जो इस लंबी नौकरी की वजह से हमेशा उपेक्षित होते रहे।

पर कभी सोचा ही न था कि कोई ऐसा जलजला आएगा
और बहा ले जाएगा मेरी सारी खुशियां एक झटके में,
और छीन ले जाएगा मेरे दिल के सभी अरमानों को,
सारे सपने और सारी खुशियों को।

और मैं इन ठगी निगाहों से बेबस लाचार खड़ी,
सब देखती रह गई ।
जिंदगी के उस मोड़ पर जहाँ आपको जरूरत होती है
एक साथ की, एक एहसास की ।

आधी अधूरी सी ये जिंदगी अब एक बोझ सी लगती है,
जिसमें ना कोई उमंग है, ना कोई ख्वाहिश
और ना ही कोई उत्साह ।

जिंदगी के ऐसे मोड़ पर ये तन्हाई, सूनापन और उदासी
ऐसे डसती है जैसे
कोई ले गया हो
इस जिस्म से जान निकालकर।
और छोड़ गया हो
एक ऐसी बोझिल जिंदगी ,
जिसे जीना भी मुश्किल
मरना भी मुश्किल ।



सुरभि 2023

दीनबंधु

श्री अजय साव
कनिष्ठ अनुवादक
लेखापरीक्षा-प्रबंधन समूह-II, पुरी



जगन्नाथ जी आप ही हो सभी निर्बल के सहारे,
वे सभी आते हैं आपके पास जो हैं मन के हारे ॥

सभी धामों में सर्वश्रेष्ठ है आप का धाम ,
सभी बिगड़ों का बनता है आपके पास आकर काम ॥

सभी भक्तजन करते हैं आपसे एक ही मुराद,
सदा जीवन रहे उनका आबाद ॥

न रहती है दुखो की कोई छाया आकर आपके द्वार,
आप हर लेते हो सभी का कष्ट जो लगाते हैं आपसे गुहार ॥

जिनके जीवन में है अंधियारा,
अगर मिल जाए आशीर्वाद आपका तो सारी पीड़ा हो जाती है
एक किनारा ॥

सभी जीव होते हैं आपके समक्ष नतमस्तक,
देव को भी जाना पड़ता है आपके पास जब आती है आपकी
दस्तक ॥

आपकी दया है सभी भक्तों पर अपरंपार,
खुला हुआ है सभी के लिए आपका दरबार ॥

कोई न जाता खाली हाथ ,
सभी को मिलता है आपका साथ ॥

आपकी करुणा है अपरंपार ,
करो प्रभु जगत का उद्धार ॥

हर अनाथ के हो आप नाथ,
इसलिए हो आप जगत के नाथ जगन्नाथ ॥

जय जगन्नाथ जो गाता है,
मनचाहे सुख को पाता है ॥

हर दीन के हो आप बंधु
इसीलिए आप जाने जाते हो जगत में दीनबंधु ॥



सुरभि
2023

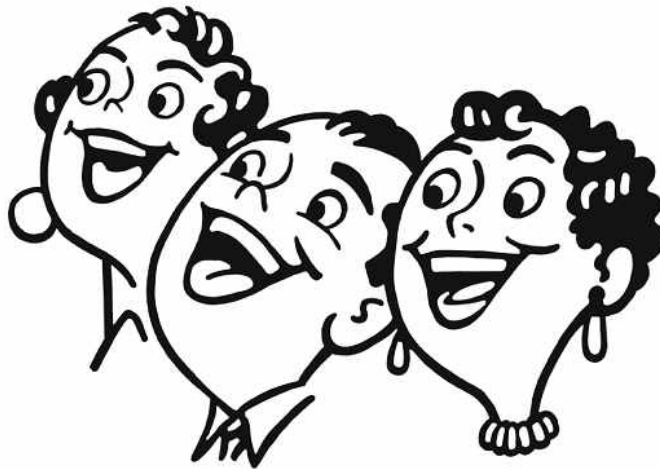
शुल्क-निःशुल्क

श्री स्वर्णजीत कुमार सिन्हा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
लेखापरीक्षा-प्रबंधन समूह-II, पुरी



यह भारत नदियों का मुल्क है,
पानी भी भरपूर है।
बोटल में बिकता है,
बीस रुपया शुल्क है।
यह गरीबों का मुल्क है,
जनसंख्या भी भरपूर है
परिवार नियोजन मानते नहीं,
जबकि नसबंदी निःशुल्क है।
यह अजीब मुल्क है
निर्बलों पर हर शुल्क है
अगर आप हो बाहुबली,
हर सुविधा निःशुल्क है।
यह अपना ही मुल्क है,
कर कुछ सकते नहीं।
कह कुछ सकते नहीं,
जबकि बोलना निःशुल्क है ।

यह शादियों का मुल्क है,
दान दहेज भी खूब है ।
शादी में है भरपूर खर्च
जबकि कोर्ट मैरिज निःशुल्क है।
यह पर्यटन का मुल्क है
रेलें भी खूब हैं ।
बिना टिकट पकड़े गए तो,
रोटी कपड़ा निःशुल्क है।
यह अजीब मुल्क है,
रहकर चुनने का हक है।
वोट देने जाते नहीं,
जबकि मतदान निःशुल्क है।



सुरभि
2023

दिल और दिमाग के बीच कशमकश

श्री प्रमोद कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
लेखापरीक्षा-प्रबंधन समूह-II, पुरी



आज हम देखते हैं कि दिल और दिमाग के बीच कशमकश में

अंततः जीत किसकी होती है ?

कहता है दिल कि रिश्ते दिल से निभाये जाते हैं,
दिमाग से तो गणित के कठिन सवाल सुलझाये जाते हैं॥

कहता दिल है कि ये काम न कर तू,
पर कहता है दिमाग कि ये करने में तेरा क्या जाता है ॥

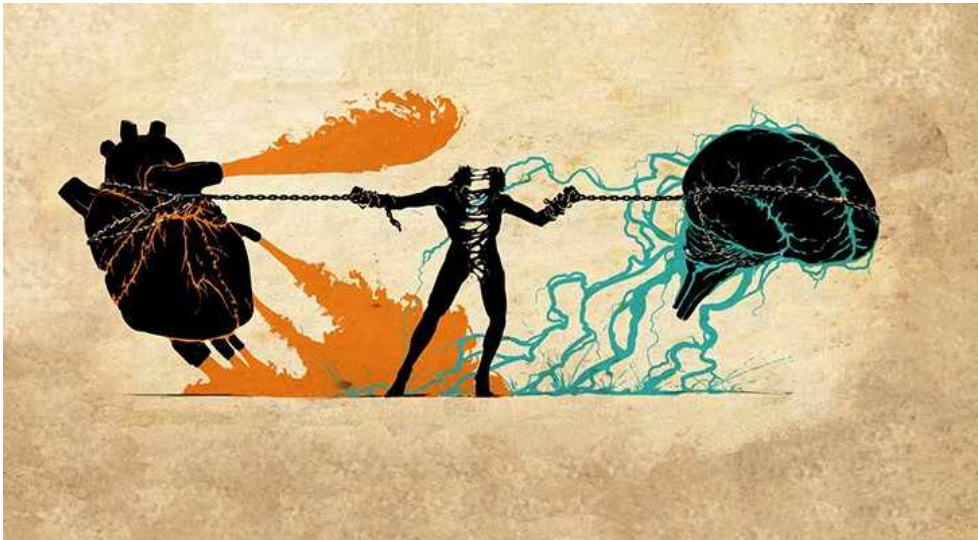
कहता है दिल कि कह पाते उनसे दिल की हर बात,
पर कहता है दिमाग कि हो समझने को कोई तैयार तब न ॥

कहता है दिल कि खुश रह हर हालात में,
पर कहता है दिमाग कि कोई खुश रहने दे तब न ॥

कहता है दिल कि कर विश्वास सभी पर,
कहता है दिमाग कि धोखे भी अपने ही देते हैं ॥

कहता है दिल कि बोल दे बिना सोचे, निश्चय बोल
पर कहता है दिमाग कि बोल सदा तोल-मोल के॥

कहता है दिल कि हो जब पारिवारिक बात,
सदा सुनो दिल की बात
पर कहता है दिमाग कि सदा कहो सही बात
कहता है दिमाग कि करो व्यवहार वैसा जैसा लोग करे
तेरे साथ पर,
कहता है दिल कि क्या फर्क रह जायेगा उनमें और तुममें
अंततः इसी कशमकश में अक्सर दिल हार जाता है
दिमाग से ॥



क्या हम अपनी हरियाली के रक्षक हैं ?

श्री सत्यनारायण दास
एम.टी.एस
लेखापरीक्षा-प्रबंधन समूह-II, पुरी



एक घनी अंधकार युक्त रात और बाहर जोरों की आँधी चल रही थी। बादलों ने भी बहुत जोर से गरजना शुरू कर दिया। बारिश भी शुरू हो गई थी, पास के जंगल में से किसी की चिल्लाने की आवाज आ रही थी, मानो कोई कह रहा हो " सब दौड़ के आओ, दौड़ के आओ"। हाथियों का झुंड आ गया है। धान के खेत में घुस जाएँगे। जरा आप सोचेंगे ऐसा क्यों होता है ? सरकार लाखों रुपये खर्च करती है ताकि जंगल का विकास हो और जंगलों को और घना एवं हरा भरा बनाया जा सके ताकि जंगलों का विकास हो पाये। मगर हमारा मनुष्य समाज क्या करता है दिन दोपहर काट कर उसको पूरा मैदान बना देता है। जरा आप सोचिए हम तो जंगलों को काट देते हैं, मगर उसे फलने फूलने में कितना समय लगता होगा ?

जैसे एक छोटा शिशु अपने माँ से स्तनपान करने के लिए अपने माँ को बुलाने के लिए सिसक- सिसक कर रोता है, वैसे ही एक ऐसा समय आएगा जब हम आक्सीजन पाने के लिए रोएँगे। मेरे कहने का यह तात्पर्य है कि हम जितना पेड़ों को काटते हैं उतना रोपते क्यों नहीं हैं ? हम जिस तरह वृक्षों को काटते हैं, उसी तरह लगाने कि सोचते क्यों नहीं हैं ? पेड़ों की उपलब्धियों को हम अपने मन में ग्रहण क्यों नहीं करते ? हमें उसकी व पेड़ों की उपलब्धियों को अपने मन में ग्रहण करनी चाहिए। वृक्ष हमें छाव देते हैं, भूखों के पेट को आहार, फल व फूल प्रदान करते हैं। वर्षा कराने में भी सहायक सिद्ध होते हैं। पेड़ व जंगलों की मनुष्य के जीवन में बहुत बड़ी भूमिका होती है।

वन सम्पदा एक मुख्य उपादेय है जोकि इस भू पृष्ठ को व धरती को कड़ी धूप व झुलसे हुए गर्मी, भारी वर्षा व ठंड के प्रकोप से रक्षा करती है। ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु एवं शीत ऋतु के बीच में समन्वय करने में सहायक होते हैं जंगल, वन सम्पदा के माध्यम से इस दुनिया में व पूरे विश्व में जितने भी पर्यटन शिल्प है उसको हम

मजबूत बना सकते हैं। सरकार भी इस पर ध्यान देने लगी है जैसे जैव विविधता स्थलों को (बी.एच.एस) ओडिशा के गजपति जिले में एक एकड़ परिमित छोटे स्थान में 300 से ज्यादा प्रजातियों के पौधे व आयुर्वेदिक पेड़ों का दिखना। जैव विविधता के सम्पर्क में ज्ञान प्रदान करने के लिए इंटरप्रीटेश (Interpretation center) तैयार करने चाहिए। जंगल से मिली जड़ी-बूटी औषधि व्यावसायिक दृष्टि से स्थानीय लोगों को स्वलम्बी करेगी। केरला, महाराष्ट्र और तेलंगना के बाद अब राज्य सरकार जैव विविधता पूर्ण स्थानों को चिन्हित करने की कोशिश में जुटी है। यदि सरकार का यह योजना सफल होती है तब ओडिशा इस तालिका में चौथे स्थान पर रहेगा।

महाराष्ट्र के गडचिरोली जिला नक्सलियों के आतंक से त्रस्त है, ग्लोरी ऑफ पीपल्स ऑफ जंगल पहले से अपने समृद्ध जैव विविधता के लिए देश में जैव विविधता पूर्ण स्थल के नाम से मान्यता प्राप्त है। पुराने समय में लोग पेड़ के पत्तों व उसकी जड़ और छोटे छोटे पौधों को व्यवहार में लाकर औषधि बनाते थे, अब तक ये प्रथा बंद तो हुई नहीं है मगर एक प्रकार विलुप्त सी हो गयी है। होम्योपैथी, एलोपैथी के चिकित्सा पद्धति में बहुल मात्रा में प्रचार एवं प्रसार के कारण लोग प्राकृतिक चिकित्सा से बहुत दूर चले गए हैं। नेचुरोपैथी को इतना महत्व न देकर एलोपैथी अपना रहे हैं। अब समय आ गया है कि हमसब को मिलकर पदक्षेप लेना चाहिए जैसे कि हम अपने भविष्य पीढ़ी के लिए वृक्षों व वनों की रक्षा करें और आने वाले दिनों के लिए बचा कर रखें। हमें अपने भावी पीढ़ी को जता देना चाहिए कि वे भविष्य की पीढ़ी के लिए वृक्षों को लगाये व जंगलों की वृद्धि करें, इस पृथ्वी को गर्मी से बचायें। विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक विपदा से रक्षा करें। हमें उसके लिए सजग रहना पड़ेगा। जंगलों की वृद्धि से प्रत्येक वर्ष आने वाली सूखे, बाढ़ और चक्रवाती तूफान से रक्षा कर पायेंगे।

"नीलाचल निबसाय नित्याय परमात्मने । बलभद्र सुभद्राभ्यं जगन्नाथयते नमः ॥

सुश्री वर्षारानी प्रतिहारि
 लिपिक
 लेखापरीक्षा-प्रबंधन समूह-II, पुरी



"नीलाचल निबसाय नित्याय परमात्मने ।
 बलभद्र सुभद्राभ्यं जगन्नाथयते नमः ॥

मेरी तरफ से सभी को " जय जगन्नाथ " । मैं श्री जगन्नाथ जी के सेवायत परिवार से हूँ और मैं जगन्नाथ संस्कृति के बारे में आपको बताना चाहती हूँ।

जैसे कि हिन्दू धर्म में चार धाम का जिक्र किया गया है। पहले स्थान पर आता है बद्रीनाथ धाम, जिसको सत्य युग का धाम माना जाता है। दूसरे स्थान पर है रामेश्वरम धाम, जो त्रेता युग का है। तीसरी स्थान पर द्वारिका धाम, जो द्वापर युग का है। श्री जगन्नाथ पुरी धाम जो सत्य युग में स्वयं ब्रह्म जी के हाथों प्रतिष्ठित किया गया, कलियुग का अद्वितीय श्रेष्ठ पुरुषोत्तम धाम के नाम पर माना जाता है। जिसके बारे में स्कन्ध पुराण में वर्णित है :-

"क्षेत्रसु सर्व क्षेत्राणां राजा श्री पुरुषोत्तमः
 देवसु सर्व देवा नां राजा श्री पुरुषोत्तमः। "

अर्थात् ये क्षेत्र इस जगत का सबसे बड़ा पवित्र और महत्वपूर्ण पावन धाम है। ये भगवान सारे देवता से श्रेष्ठ हैं। भगवान जी का मंदिर बहुत वयचित्तमय है। यहाँ पर श्री जगन्नाथ जी की सभी लीला बहुत विचित्र हैं और ये हर दिन लीला कैसे करते हैं ये स्वयं श्री जगन्नाथ जी 'स्कंद पुराण' में 'प्रतिमा उवाच' में कह रहे हैं। प्रतिष्ठा के समय ब्रह्म जी को भगवान जी कहते हैं उनकी सेवा पूजा कैसे करें।

भागवत में वर्णित :-

"दोलयत्र दमनक महोक्षस्य पूर्णतृतिया ।
 मंचस्नान रथवर गतिः सायनं चायने द्वे ॥

पासर्ववृत्तिः सयन निवृत्तिः प्रवृत्तिः पुष्य पूजा ।

चैव यात्रा निगदिता द्वादशौता नरेंद्र ॥०॥

भगवान जी के पास बारह महीने में तेरह यात्रा होती हैं। पहली यात्रा 'अक्षय तृतीया' वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन अनुष्ठित होती है। रथ यात्रा के लिए रथ निर्माण का शुभारम्भ इसी दिन से होता है। भगवान जी स्नान करते हैं " स्नान यात्रा

" जो ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन होती है। श्री जगन्नाथ जी भक्तों के पास आते हैं यानि कि गति करते हैं विश्व प्रसिद्ध " रथ यात्रा " जो अषाढ शुक्ल तृतीया के दिन अनुष्ठित होती है। भगवान जी सोते हैं तो इसे "हरिशयन एकादशी" के नाम से जाना जाता है जो आषाढ शुक्ल एकादशी के दिन होता है ; उत्तर दिशा को घूमना " उत्तरायण " कहते हैं , दक्षिण दिशा को घूमना "दक्षिणायन" कहते हैं; करवट बदलते हैं तो इसे "पार्श्वपरिवर्तन एकादशी" कहते हैं एवं उठते हैं तो "देवोत्थापन एकादशी" अनुष्ठित होता है। "पुष्याभिषेक" जो पौष पूर्णिमा के दिन होता है। फिर फाल्गुन पूर्णिमा के दिन " दोल यात्रा " मनाया जाता है। " दमनक " भगवान जी को दयणा लागि चैत्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन अनुष्ठित होता है।

हर दिन भगवान जी का पांच बार श्रृंगार होता है; छः बार भोजन करते हैं। स्नान के लिए एक श्रृंगार उसके बाद पहला भोग (राज भोग), 'सकाल धूप' उसके लिए एक बार, 'मध्याह्न धूप' के लिए एक बार, फिर 'संध्या धूप' के लिए एक बार, अंत में भगवान जी का "बड़ श्रृंगार " सज होता है, जिस सज में भगवान शयन करते हैं। कृष्ण जन्म के समय भगवान श्री जगन्नाथ जी कृष्ण जी का रूप धारण करके कृष्ण लीला करते हैं। पूरे साल में श्री जगन्नाथ जी का चौतीस प्रकार का शृंगार किया जाता है।

हर दिन सुबह की मंगला आरती के बाद भगवान जी का अवकास पूजा / स्नान पूजा होता है। उस समय भगवान जी "गमछे" पहनते हैं। जिसको मंदिर की भाषा में ' तडप ' कहा जाता है। इस शृंगार को 'तडप लागी' कहते हैं। सिंघारी सेवायत भगवान जी का स्नान करवाते हैं उस समय ज्योतिषी के द्वारा राशिफल पढ़ा जाता है एवं श्री जगन्नाथ जी को बताया जाता है कि उनके राशि के अनुसार उनके लिए उस दिन में कितना समय महेंद्र वेला है एवं कितना समय घात चंद्र है सब कहा जाता है। बड़ी आश्चर्य की बात ये है जो राशिफल में पढ़ा जाता है उस दिन भगवान जी का दिन वैसा ही गुजरता है।

सुरभि 2023

सबसे बड़ी विचित्र बात ये है कि इस दुनिया की सबसे बड़ी पाकशाला (रसोईघर) श्री जगन्नाथ जी के मंदिर में है। जहाँ पर हर दिन 600 सुपकार सेवायत काम करते हैं। पूरी प्राकृतिक प्रक्रिया से रसोई बनाते हैं। मिट्टी के बरतन, लकड़ी का चूल्हा और कुएं के पानी से हर दिन लाखों लोगों के लिए खाना बनता है। हर दिन भगवान जी को छः बार भोग लगता है - गोपाल वल्लभ, सकाल धूप, भोग मंडप (आदिगुरु शंकराचार्य की समय से प्रचलित), मध्याह्न धूप, संध्या धूप, बडशृंगार भोग। तीन ऐसे महीने हैं जब भगवान जी को सात बार भोग लगता है। कार्तिक महीना में 'बाल भोग', पौष महीने में 'पहिली भोग' और चंदन यात्रा के इक्कीस दिन तक 'जात भोग'। यहाँ पर हर दिन लाखों भक्त आने के बावजूद भी कभी महाप्रसाद की कमी नहीं होती।

शास्त्रों में वर्णित एक श्लोक :-

"कृते तपी, त्रेतयां यां लीलापात्रं कपय स्तथा ।
 द्वापर गोपिका स्चोब कलौ सबक मंडलम् ॥

जो सब सत्य युग में तपस्या कर रहे थे, त्रेता युग में भगवान जी के साथ बानर के रूप में थे, द्वापर युग में गोपी के रूप में थे, वो सब इस कलियुग में सेवायत के रूप में भगवान श्री जगन्नाथ जी की सेवा एवं पूजा कर रहे हैं।

इन पुरातन सेवा पूजा पद्धति को वर्ष 1952 में माननीय

उच्चतम न्यायालय (Honorable Supreme Court) के द्वारा स्वीकृत में "श्रीमंदिर सत्त्वलिपि" (Records of Rights) एक पुस्तक बनायी गयी है और मंदिर के लिए स्वतंत्र "श्री जगन्नाथ मंदिर अधिनियम" (Sri Jagannath Temple ACT) का प्रणयन किया गया है। जिस पुस्तिका के अनुसार भगवान श्री जगन्नाथ जी के 120 प्रकार की सेवा होती है।

आखिर में श्री जगन्नाथ जी जिस सिंहासन में विराजमान हैं उनके सामने उनका वाहन गरुड जी स्तम्भ पर पूजा पाते हैं, जितने ऊंचाई पर श्री जगन्नाथ जी विराजमान हैं उतनी ऊंचाई पर वह भी विराजमान हैं। आश्चर्य की बात ये है कि पूरे विश्व में श्री जगन्नाथ मंदिर एकमात्र ऐसा मंदिर है जहाँ स्वयं ब्रह्म जी और शंकर भगवान जी, जगन्नाथ जी के तरफ हाथ जोड़ कर खड़े हैं और कह रहे हैं " भगवान इस धरती पर आपकी क्या लीला चल रही है हम समझ नहीं पा रहे हैं।" हम इंसान श्री जगन्नाथ जी के बारे में क्या बताएं। इस लिए कहा गया है :-

"सर्व रहस्य पुरुषोत्तमस्यः ।
 देव न जानती कुतः मनुष्यः । "

----- जय जगन्नाथ -----



रघुराजपुर : ओड़िसा का 'आर्टविलेज' जहां हर घर में मौजूद है एक बेहतरीन कलाकार

सुश्री आंखी सरकार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



रघुराजपुर को ओड़िसा के 'आर्टविलेज' के नाम से जाना जाता है। रघुराजपुर उड़ीसा के पवित्र शहर पुरी से 14 किलोमीटर दूर भार्गवी नदी के तट पर स्थित है। इस गाँव को प्रख्यात पट्टचित्र पेंटिंग की शुरुआत के लिए भी जाना जाता है। इस खास गाँव में आपको हर ओर चित्रकला देखने को मिल जाएगी। गाँव के घरों की दीवारों पर की गई चित्रकारी हर किसी के भीतर इस गाँव के प्रति दिलचस्पी पैदा कर देती है।

बर्फी जैसा गुलाबी, चमकदार नीला, गहरा गेरुआ, बैंगनी, हल्का नारंगी, देवी-देवताओं की नक्काशी और चित्रकारी, दीवार पर उड़ते हरे तोते, ओड़िसी नृत्य का घर, खूब हरा - भरा, ये नज़ारा मिलता है, पुरी जिले के रघुराजपुर गाँव में। इस गाँव में 300 से ज्यादा कलाकार हैं जो कई तरीके की पारंपरिक कलाकृतियां बनाते हैं और इस कला को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं। इन कलाकारों के यहाँ 100 से ज्यादा घर हैं। हर घर अपने आप में बेहतरीन खूबसूरती को समेटे हुए है। मंदिरों की एक पूरी श्रृंखला है। रघुराजपुर गाँव के लोगों में बस दो ही चीजें बसती हैं, आस्था और कला- एक अगर यहाँ के लोगों के लिए सांस की तरह है तो दूसरी आत्मा है। यहाँ की कलाकृतियों में भगवान जगन्नाथ व दूसरे देवीदेवताओं से जुड़ी पौराणिक कहानियाँ देखने को मिलती हैं। इस कला को पट्टचित्र कहते हैं। पट्ट एक उड़िया शब्द है जिसका मतलब होता है कैनवास और चित्र यानि कि तस्वीर, पेंटिंग। पट्टचित्रकला की शुरुआत 12वीं सदी में हुई थी। इन कलाकृतियों को बनाने के लिए जिस कैनवास का इस्तेमाल

होता है वह नारियल के पेड़ की लकड़ी से बना होता है। इन चित्रों में रंग भरने के लिए यहाँ के चित्रकार फूल, पत्तियों से बने प्राकृतिक रंगों को तैयार करते हैं। चित्रकार पेंटिंग्स में भगवान कृष्ण की कहानियों को इस तरह उतारते हैं कि उन्हें देखकर कोई भी पूरी कहानी जान सकता है। इनमें से कई कलाकारों को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं। इस गांव को ताड़ के घूमे हुए पत्तों से बनी तस्वीरें जिनमें कटआउट के साथ काले रंग में चित्रित चित्र, तुलसी रेशम, पत्थर और लकड़ी के नक्काशी पर नाजुक ब्रश का काम होता है, के लिए भी जाना जाता है। ताड़ के पत्ते, नारियल, पारंपरिक रंग, चूहे के बाल, पत्थर और लकड़ी से बनी ये कलाकृतियां अद्भुत सुंदरता समेटे होती हैं। यहाँ के हर घर का सामने वाला कमरा स्टूडियो और प्रदर्शनी की तरह सजा होता है। यहाँ के ज्यादातर पुरुष और महिलाएं उड़िया भाषा ही बोल पाती हैं। इसी भाषा में वे अपनी कला की बारीकियों और तकनीकों के बारे में लोगों को बताते हैं।

रघुराजपुर गोतीपुआ नामक एक फोक डांस के लिए भी जाना जाता है, जो ओड़िशी नृत्य का आरंभिक स्वरूप है। यहाँ कलाकार इस लोकनृत्य को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पेश करते हैं। प्रसिद्ध ओड़िशी नृत्य के गुरु, स्वर्गीय पद्मविभूषण-गुरु केलुचरण मोहापात्रा इसी गांव के थे। उनके पिता भी पट्टचित्र के कलाकार थे और मृदंगम बजाते थे। केलुचरण मोहापात्रा ने गोतीपुआ को सीखा और इसके बाद उन्हें बाकी ओड़िशी नृत्य भी सीखे। आज भी यहाँ एक डांस स्टूडियो है जिसमें यहाँ के युवा कलाकार नृत्य सीखते हैं।

सुरभि 2023

रघुराजपुर गाँव को सन 2000 में हेरिटेज विलेज यानि धरोहर गाँव के तौर पर मान्यता मिली थी। तब से ही भारत-सरकार की मदद से एनटीएसीएच, आईसीसीआई, नोराड और आर्ट्स के लिए इंडिया फाउंडेशन जैसे संस्थान रघुराजपुर को क्राफ्ट गाँव के तौर पर विकसित कर रहे हैं। ये संस्थाएं यहाँ के कलाकारों को नई तकनीक की सीख दे रही हैं। साल 2017 में बैंक ऑफ इंडिया ने इस गाँव को डिजिटल गाँव के तौर पर

अडॉप्ट किया और यहाँ बिक्री मशीनों के 20 प्वाइंट्स लगाए। बैंक ने 200 बचत खाते भी खुलवाए। गाँव में एक एटीएम भी लगा है और यहाँ के कुछ कलाकार पेटीएम के ज़रिए भी भुगतान लेते हैं। रघुराजपुर को आदर्श शिल्प गांव योजना में शामिल किया गया है और ऑनलाइन स्रोतों के अनुसार, भारत सरकार ने गांव के समग्र विकास के लिए 100 मिलियन डॉलर की मंजूरी दी है।



सुरभि
2023

मानसिक स्वास्थ्य

श्रीमती तुलसी वर्मा
पत्नी श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



आज इस विज्ञान के युग में सब कुछ आसान हो गया है,
लेकिन इससे हमारे मस्तिष्क में युद्ध घमासान हो गया है,
शारीरिक पीड़ा के लिए हमारे पास डॉक्टर मौजूद हैं,
पर मत भूलो मानसिक स्वास्थ्य का भी एक वजूद है।

सब कुछ इतना तेज है,
फिर भी चेहरे पर तेज नहीं,
मानसिक स्वास्थ्य भी एक प्रकार का विज्ञान है,
लेकिन इसे समझ पाना इतना भी आसान नहीं।

सामाजिक नियमों का इसमें काफी योगदान है,
छोटे बच्चों के खेलने आज बड़ों का पीक दान है,
क्योंकि बच्चों का जीवन अवसादों से घिर रहा है,
जो चाहता है चलना और दौड़ना वो तनाव से गिर रहा है।

देखकर परिणाम को किसी की भी दिनचर्या बता देते हैं,
बिना मन को टटोले इन्सान की मनोस्थिति समझा देते हैं,
ऐसा किसी विधि का विधान नहीं,
परिणाम देखकर ले गलत या सही का निर्णय,
ऐसा कोई मनोविज्ञान नहीं।

चाहे जितनी तरक्की कर ले विज्ञान मनोभाव नहीं वता
सकता,
जब हो जरूरत किसी अपने की विज्ञान काम नहीं आ
सकता,

इस व्यस्त जीवन में माना की मस्तिष्क में काफी तनाव है,
लेकिन कुछ भी कहो मतलब इसका साफ़ है,
जीवन में, प्रेम शांति और देखभाल का अभाव है।



सुरभि
2023

पैगाम

सुश्री राजेश्वरी गायकवाड़
एम.टी.एस
लेखापरीक्षा-प्रबंधन समूह-II, पुरी



आज बड़े दिनों बाद उनका पैगाम आया है ।
मैं खुश हूँ चलो उनके लबों पर मेरा नाम आया है ॥
खुशी की बात मत पूछो जैसे शबरी के राम आये हैं ।
और क्या बताऊँ जैसे सुदामा कृष्ण के धाम आये हैं ॥
सिहर रहा है रोम-रोम जैसे मुरलीधर के लबों पर
राधा का नाम आया है ।
थम नहीं रहे आंसू जैसे साक्षात मीरा के घनश्याम आये हैं ।
या यूँ कहूँ प्रभु श्री राम की खबर लेकर अशोक वाटिका में हनुमान आये हैं ॥
तृप्ति की मत पूछो जैसे वर्षों की बूंदों ने पपीहे की प्यास को बुझाया है ।
आज बड़े दिनों बाद उनका पैगाम आया है ॥
मैं खुश हूँ ।
चलो उनके लबों पर मेरा नाम आया है ॥



सुरभि 2023

प्रार्थना

श्रीमती कमला नायक
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



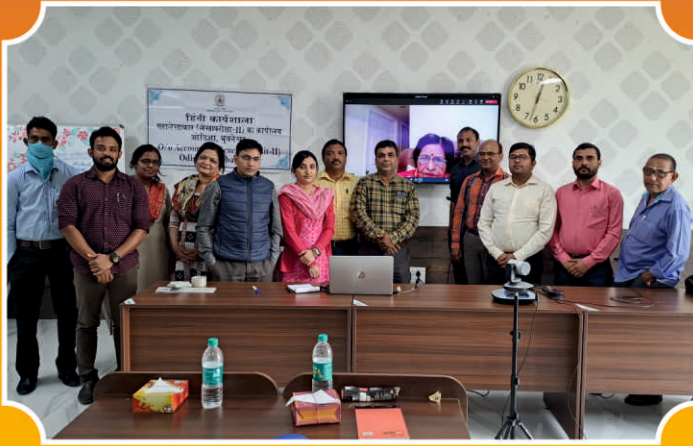
मैं बलिष्ठ हूँ, कामयाब हूँ,
मैं डरावना हूँ, लेकिन पालतू भी हूँ,
जगत ही मेरा खाद्य का भंडार है,
शाकाहारी होकर भी मैं बाहुबली हूँ।
जंगल मेरा घर है, वन्य पशु मेरे दोस्त हैं,
शेर, सिंह और मनुष्य कभी मेरे शत्रु भी बनते हैं।
सबसे अच्छा मित्र मेरा मनुष्य ही है,
मेरा दर्द न समझने पर उन्हें क्षति पहुंचाता हूँ,
लेकिन मन को भाता तो उनकी जंजीरों से कैद भी हो जाता हूँ,
प्यार का प्यासा हूँ, जीने की आशा रखता हूँ।
अतीत मेरा ऐश्वर्य और गौरव से है भरा है,
चक्रवर्ती राजाओं की सवारी था मैं,
युद्ध में करते मुझ पर भरोसा।

बच्चों की कहानियों का हीरो हूँ मैं;
गणेश जी ने मेरे सर को अपनाया।
मेरे विशाल चेहरे पर रहती हमेशा हँसी,
दोनों दांत मेरे अद्भुत लेकिन अमूल्य खज़ाना;
सुख के सार, दुख मेरे दांत लाते;
शिकारी की नज़र हमेशा मेरे दांत पर रहती,
बिना कारण मेरी मौत बुलाते।

राजपाठ चला गया, युद्ध का रुख बदल गया;
औद्योगिकीकरण और उन्नति के लिए जंगल काट दिए गए,
हमारे आने जाने के रास्ते पर रेलवे लाइन बन गई,
बारिश की कमी से जलाशय सूख गए।

आहार और आश्रय के बिना हम बेघर हो गए,
जंगल छोड़कर हम मनुष्य के आश्रय में घुसने लगे।
रोज़ रोज़ हम दुर्घटना के शिकार होने लगे,
हमारी संख्या कम होती जा रही है,
सरकार की चिंता बढ़ती जा रही है।
जब हमारी चिंता सरकार करने लगी है,
हमको जीने का भरोसा मिल गया है।
इस विपत्ति की घड़ी में,
एक पुरस्कार की घोषणा ने,
भर दी प्रेरणा और मस्ती हमारे मन में।
कार्तिकी गौसाल्विस के निर्देशन ने,
और गुनीत मोंगा की कोशिश ने,
"द एलीफेंट व्हीस्पर्स" चलचित्र
भारत के लिए ले आया गौरव का एक पल,
सम्माननीय 15 ऑस्कर अवार्ड्स के रूप में,
जिसके लिए देश था बेकरार।
दर्शाया गया है इसमें हमारा असली चरित्र,
बोल नहीं पाते लेकिन है हममें अनुभव का ज्ञान,
मनुष्य के लिए दे सकते हैं प्यार का प्रतिदान।
दया, प्यार, क्षमा सब है हमारे अंदर;
जानवर हैं फिर भी भूलते नहीं मनुष्य का अवदान।
इसलिए प्रार्थना है सरकार से
पूरी कीजिये हमारे मन की अभिलाषा।
हमको अपना सारथी बनाओ, दर्द हमारा पहचानो;
विलुप्त होने से पहले हमको बचाओ।







दिव्यांशी मिश्रा



तितली पण्डा

